

देवशंकर नवीन
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया/5, इंस्टीच्यूशनल एरिया, फेज 2, वसंतकुंज, नई दिल्ली
110070
मोबाइल 0-9868110994

बटुआमे बिहाड़ि आ बिड़ो

(राजकमल चौधरीक उपन्यास)

ग'रसँ देखला पर बात तय होइत अछि जे उपन्यास भारतीय साहित्यक सबसँ गतिशील विधा थिक। भावककें एतए अपन तथा परिवेशक सम्यक् चित्र सम्पूर्ण वैविध्यक संग भेटैत अछि। एहि तथ्यमे सेहो किनकहु कोनो संशय नहि छनि जे साहित्यमे उपन्यास विधाक आविर्भाव समाजमे आधुनिक सभ्यताक विकासक फलस्वरूप भेल। विज्ञान एवं तकनीकी विकासक फलस्वरूप यूरोपमे सतरहम शताब्दीमे पूंजीवादक पाँखि पसरल, सामाजिक परिवर्तनक झोंक आएल, आ साहित्यमे उपन्यास विधाक आविर्भाव भेल। मुदा से भारतीय साहित्यमे उपन्यासक उद्भवक स्रोत नहि थिक। विहंगम दृष्टिसँ देखी तँ भारतीय साहित्यमे उपन्यासक उद्भवक स्रोत सन् 1857क प्रथम स्वाधीनता संग्राम, आ तकर निराशाक कारणे भारतीय बुद्धिजीवीक बीच जाग्रत चेतनाकें मानल जाएत। एकर सूत्र उनैसम शताब्दीक प्रारम्भिक कालमे भारतीय बौद्धिक जन'क मोनमे उठल नव चेतनासँ सेहो जुड़ैत अछि, राजा राममोहन राय द्वारा समर्थित नवजागरणसँ सेहो जुड़ैत अछि, 'बंगाल नवजागरण' आ 'महाराष्ट्र प्रबोधन'सँ सेहो जुड़ैत अछि। हिन्दी पट्टीमे अइ नवजागरणक हवा थोड़ेक देरीसँ आएल। मुदा भारतेन्दु मण्डलक बुद्धिजीवी वर्ग सम्पूर्ण तत्परता आ प्रतिबद्धताक संग एकर उद्घोष केलनि, परिणति धरि पहुँचौलनि।

हिन्दीमे उपन्यास लेखन नवजागरण कालहिमे प्रारम्भ भेल। 'परीक्षा गुरु' (1882) 'त्रिवेणी' (1890) आदि औपन्यासिक कृतिसँ लाला श्रीनिवास दास आ किशोरी लाल गोस्वामी एहि विधाक शुभारम्भ केलनि। डेढ़-दू दशक बाद हिन्दी उपन्यास अपन पूर्ण ज्योतिक संग दैदीप्यमान होए लागल। जयशंकर प्रसादक 'कंकाल' (1929), 'तितली' (1934); जैनेन्द्र कुमारक 'परख' (1929), 'सुनीता' (1935), 'त्यागपत्र' (1937);

प्रेमचन्दक 'सेवासदन'(1916), 'प्रेमाश्रम'(1918), 'रंगभूमि'(1926), 'गोदान'(1937) आदि उपन्यासक प्रकाशन भ' चुकल छल। देवकी नन्दन खत्रीक 'चन्द्रकान्ता'(1888) आ 'चन्द्रकान्ता सन्तति'(1896) तँ एहि सबसँ पूर्वहि प्रकाशित भ' कए ख्याति अर्जित क' चुकल छल। जनतब अछि जे भारतीय भाषा सबमे सबसँ पहिने बंगलामे उपन्यास लेखन शुरुह भेल।...मैथिलीमे उपन्यास लेखनक प्रारम्भिक अवधि थिक सन् 1914-1933, अर्थात् 'निर्दयी सासु'सँ 'कन्यादान'क रचनाकाल धरि। एहि मध्य कैक टा उपन्यास लिखल गेल, मुदा एहि समय धरि हिन्दी आ आन भारतीय भाषाक उपन्यासक प्रगति देखैत विषयक विस्तार आ शिल्प-शैलीक नूतनताक दृष्टिँ उल्लेखनीय उपन्यास थिक-निर्दयी सासु(जनार्दन झा 'जनसीदन')1914, रामेश्वर(जीवछ मिश्र)1916, सुमति(रासबिहारी लाल दास)1918, मनुष्यक मोल(कुमार गंगानन्द सिंह)1924, मिथिला दर्पण(पुण्यानन्द झा)1925, पुनर्विवाह(जनार्दन झा 'जनसीदन')1926, चन्द्रग्रहण(कांचीनाथ झा 'किरण')1932, कन्यादान(हरिमोहन झा)1933 आदि।

एहि आँकड़ाकें देखैत ई लगैत अछि जे मैथिली उपन्यासक मूल लेखन नहि किछु तँ दू-अढ़ाई दशक पाछू आबि कए प्रारम्भ भेल, आ शीघ्रै माटि पकड़ि लेलक। ध्यान रखबाक थिक जे पहिने बिहार आ बंगाल एकहि प्रान्त छल, कलकत्ता तकर प्रशासन केन्द्र छल। सन् 1912मे बिहार-बंगाल विभाजित भेल मुदा मिथिलाक लोकक सम्पर्क कलकत्तासँ बनले रहल। उल्लेखनीय अछि जे स्वातन्त्र्योत्तर काल, अथवा ताहूँसँ आगू, आपातकालक बाद धरि रोजगारक टोहमे विभिन्न आयुवर्गक मैथिल दिल्ली, पंजाब, गुजरात महाराष्ट्र दिश अपन रुखि केलनि, मुदा एखनहुँ धरि कलकत्ता-प्रेमसँ मैथिल लोकनि पूर्णतया मुक्त नहि भेल छथि।... मैथिली उपन्यासक उद्भवक स्रोत बौद्धिक जन'क स्वानुभूति, अंतःप्रेरणा, मिथिलाक समकालीन परिवेश, मानव जीवनक विसंगति, फिरंगी शासकक अत्याचार...जे रहल हो; मुदा सम्भव ईहो अछि जे बौद्धिक जनकें एहि विभाजनसँ 'निज भाषा' अर्थात् 'मातृभाषा'क उन्नति लेल; सर्वथा नव विधा उपन्यासक लेखन लेल प्रेरणा जागल होइन।

मैथिलीमे उपन्यास लिखाएल तँ जाए लागल खूब, मुदा तदनुसार सर्वविधि विकास नहि भेल-एहि तथ्यकें स्वीकार'मे संकोच नहि कर'क चाही। मिथिलाक नव बौद्धिक वर्गक मध्य सब तरहक जागरूकता आ चेतनाक अछैत मैथिलीक उपन्यास लेखन मिथिलामे स्त्रीक दयनीयता पर कनैत रहल। एते धरि जे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' धरिकें सन् 1946 मे 'पारो'क परिस्थिति पर कान' पड़लनि, जे सन् 1916सँ 1937 धरिक अन्तरालक दुनियाँ भरिक औपन्यासिक उत्थान देख चुकल छलाह। जँ

पहिनेक उपन्यासकार कनेको साहस केने रहितथि, तँ सम्भव छल, जे 'नवतुरिया'मे जे डेग यात्री उठैलनि, से डेग 'पारो'एमे उठि जइतए। चेतना आ बौद्धिकताक दृष्टिँ मिथिला क्षेत्र सदासँ आगू रहल अछि, तथापि उपन्यास लेखनक विकासोन्मुख धारामे मैथिली एहि तरहेँ पछुआएल रहल, तकर मूल कारण रचनाकारक जीवनानुभूति आ रचना-दृष्टिक कमजोरी नहि छल; मूल कारण छल मिथिलाक जनपदीय परिस्थिति आ आम नागरिकक मानस लोक।

भारतीय स्वाधीनताक दशक भरि बाद सन् 1958मे राजकमल चौधरीक पहिल मैथिली उपन्यास 'आदिकथा' प्रकाशित भेल। एहि समय धरि मैथिली उपन्यासक भण्डार कोनो तेहेन झुझुआनो नहि छल। 'चन्द्रग्रहण', 'पारो' आ 'नवतुरिया' सनक विशिष्ट उपन्यास सब प्रकाशित भ' चुकल छल। 'पारो' क कथावस्तु आ घटनाक्रम पर मिथिलाक कट्टरपन्थी लोकनि वितण्डा ठाढ़ क' चुकल छलाह। असलमे मिथिला क्षेत्रक सामान्य जनजीवनक समस्या ओहि समय धरि विकराल छल। पंजी-प्रथा आ जमीन्दारी संस्कारसँ मिथिलाक जे वर्ग आक्रान्त छल, ओएह वर्ग सामाजिक व्यवस्थाक नीति-निर्धारक होइ छल। पंजी-प्रथाक कारणेँ मिथिलामे स्त्री जातिक स्थिति दयनीय छल। बाल विवाह, बेमेल विवाह, बहु-विवाह, वृद्ध विवाह सन कुरीति पंजीए प्रथाक परिणति छल। तथाकथित उच्च कुलशीलक पुरुष अनेक बेर विवाह क' लै छलाह। कतोक किशोरी अथवा युवतीक विवाह, पिता आ पिमामहक उम्रक लोकसँ भ' जाइ छल। अइ किशोरी आ युवतीक पितावर्ग ओइ जमीन्दार लोकनिकेँ अपन उद्धारक बूझै छलाह आ तृप्त भेल घोषित करै छलाह जे बेटी आब रानी बनि राज करतीह, बेटीक मोन आ मनोभावकेँ बूझब ओ अपन दायित्व नहि मानै छलाह। जाहि समाजमे वैज्ञानिक विकासक कोनो टोप-टहंकार पहुँचि नहि सकल छल, ओतएक लोक अपन जीवन व्यवस्थाकेँ एतेक यान्त्रिक बना नेने छल, जे ओहि बेटीक बाप-माइकेँ ई नहि बुझाइन जे एकटा स्त्री लेल अन्न-पानि, जमीन-जथा, गहना-जेबरे टा सब किछु नहि होइ छै; कोनो स्त्रीक मनोवेगक उत्ताप-अनुताप, युवावस्थाक दैहिक भार सेहो बड़ अर्थ रखै छै। स्त्री मनोवेगक अइ दशाक बोध ओहि उच्च कुल-वंशीय जमीन्दारकेँ सेहो नहि होइ छलनि। अइ तरहक विवाहक परिणति दू दिशामे होइ छल – की तँ जवानीक उमेर अबैब-अबैत किशोरी विधवा भ' जाइथ, आ कि वृद्ध पति संग जवान पत्नीक रति-विलास सुखकर नहि पाबि कुण्ठित होइत रहथि। दुनू परिस्थितिमे देहक भार कोनो जवान पुरुषकेँ सौंप देबा लेल ओ युवती विधवा, अथवा अतृप्त सधवा ललायित रहै छलीह। राजकमल चौधरीक 'आदिकथा' उपन्यास एहने अतृप्त सधवा अथवा कामातुर

विधवाक कथा थिक जे अभिलाषा आ मर्यादाक दू छोरसँ तानल-छानल छथि ।

‘आदिकथा’क नायिका सुशीलाक विवाह वृद्ध जमीन्दार अनिरुद्ध बाबूसँ भेलनि । दुनूक वयसमे एक पीढ़ीक अन्तर छलनि । सुशीलाक उमेर अपन सतौत बेटा कुलानन्दसँ मेल-जोल खाइ छलनि । पहाड़ी नदी, अथवा कोशीक बाढ़ि, अथवा समुद्रक ज्वारि सन सनकी सुशीलाक जवानी आ देह-तन्त्र कोनो मर्यादाक बन्हन मान’ लेल तैयार नहि छलनि, मुदा घून खाएल चौकठि-केबाड़ सन मिथिलाक कौलिक मर्यादामे तकरा छेक क’ रखबाक प्रयास कएल जाइ छल । अइ जर्जर मर्यादाक पुल पर सम्हरि-सम्हरि क’ पैर राखि जीवन पार कर’ चाहै छलीह, मुदा बीचहिमे अनिरुद्ध बाबूक भागिन देवकान्तक कान्तिमय रूप, चट्टान सन काया-काठी देखि सुशीला, अर्थात् सोना मामीक मोन सम्हरि नहि सकलनि, ओ बहकि जेबाक उद्यम नहि केलनि, मुदा बहकि जएबासँ अपनाकें रोकि राखब एते आसानो नहि छलनि । सुशीलाक अतृप्त वासना आ दमित अभिलाषाक संकेत देवकान्तकें लागि जाइ छनि । अइ दुनू चरित्रक मनोविश्लेषण अइ उपन्यासमे बेस सूक्ष्मतासँ भेल अछि । बीचमे आओरो कतोक घटना-उपघटनाक माध्यमे मूल कथाकें माँसल आ प्रभावकारी बनाओल गेल ।

मामि-भागिनक कामातुर अनुराग सामाजिक रूपें स्वीकार्य नहि अछि, तें एहि उपन्यासक कथानक मिथिलाक पुरातन विचारक लोककें पसिन नहि पड़लनि । कहल गेल जे ई कथा सत्य नहि सत्यानुरूप अछि, एहिमे अमर्यादित सत्यक वर्णन अछि, नायक-नायिकाक मनोवृत्ति अथवा मानसिक उद्वेलनक चर्चा करै काल लेखककें उचितानुचितक ध्यान रखबाक चाही, सामाजिक बन्धक अवहेलना क’ कए कथामे विश्वसनीयता अनबाक आग्रह नहि हएबाक चाही, मामि-भागिनक कामजनित आकर्षण मर्यादाक उल्लंघन थिक ।... हमरा जनैत ई समस्त धारणा पाखण्ड थिक । वस्तुतः उपन्यासकार कोनो अखबारक सम्वाददाता नहि होइत छथि जे ओ सत्य घटनाक रिपोर्ट लिखता । कथा आ कि उपन्यास सम्भाव्यक संकेत, वर्तमानक विश्लेषण आ अतीतक अनुस्मरण करैत अछि; घटितक सूचना द’ देब मात्र ओ अपन दायित्व नहि बूझै छथि । आदर्श स्थितिसँ कथा, उपन्यासकें परहेज नहि होइत अछि, ओ तँ आदर्शक अनुसन्धानमे लिप्त रहैत अछि; मुदा अयथार्थ आदर्श ओकरा लेल उपेक्षणीय अवश्य होइत अछि । अही उपन्यासक प्रसंग राजकमल चौधरीक कहब छनि— *सोनामामीक प्रति देवकान्तक प्रेम बड़ुड आदर्श थिक । आ, अही आदर्शक रक्षाक कारणें देवक जीवन स्वाहा भ’ गेल छइन । आब अहीं कहूँ जे भस्म*

करए, आगि लेसने रहए, से आदर्श कोना, अनुकरणीय कोन तरहें? हम सामाजिक मर्यादाक पूजा करइ छी, आ (अयथार्थ) आदर्शवादितक घोर विरोध।

आदिकथा उपन्यास पर जे लोकनि मर्यादाक उल्लंघनक दोहाइ देलनि, ओ लोकनि अनिरुद्ध बाबूकें अमर्यादित पुरुष नहि कहलनि, जे अपन अशक्य अवस्थामे सन्तानहुँसैं छोट वयसक युवतीकें पत्नीक रूपमे वरन् केलनि। सुशीलाकें जखन अतृप्त मनोवेगक दौरा पड़लनि तखन श्वसुर स्थानीय जोतखी जी आडम्बर पसारलनि जे हुनका पर प्रेतनी सवार भ' गेलखिनहें। आ, भूत झारबाक बहन्नें वधू-स्थानीय सुशीलाक बाँहि, पाँजर पकड़बाक आचरण गामक लोककें अमर्यादित नहि लगलनि। किएक तँ अइ समस्त आचरणक फैंटेसीमे मिथिलाक समाज प्रारम्भहिसँ जीबैत आएल छल।

मनुष्य जें कि एकटा जटिल प्राणी थिक, तें मनुष्यक समस्त मानसिक प्रक्रिया विचित्र जटिलतासँ आबद्ध रहैत अछि। हजारह बर्खक विकास-यात्रामे मनुष्यक सभ्यता आइ जाहि स्थिति धरि पहुँचल अछि, ताहिमे विवेक धारणक विराट भूमिका अछि। मर्यादाक रक्षा विवेकहीन आचरणसँ नहि भ' सकैत अछि। मर्यादाक निर्वाहमे एक ठाम देखाओल गेल विवेकहीनता अनेक अमर्यादाक जननी होइत अछि, एहि सत्यक उपेक्षा केनिहार लोक पारो, आकि आदिकथा सन उपन्यासक कथा पर अँगुरी उठबैत छथि।

मैथिलीमे लिखल राजकमल चौधरीक तीन गोटा उपन्यास उपलब्ध अछि --आदिकथा, आन्दोलन आ पाथर-फूल। एकर अलावा हंसराजक नामे 19.11.1959 सँ 06.01.1960क बीच एक पत्रमे राजकमल चौधरी लिखने छथि... जनवरीमे एकटा मैथिली उपन्यास लिखब हम -- बटगमनी। एकटा एहन युवती पर जे भरि निजगी विभिन्न लोकक संगें पड़ाएल घुइ'ए। कथाक विस्तार जनकपुरसँ पूर्णियाँ धरि रहत।-- कहि नहि ई उपन्यास लिखल गेल अथवा नहि। आदिकथा आ आन्दोलन तँ पहिनहिसँ पाठक लोकनिकें उपलब्ध छलनि। पाथर-फूल उपन्यास हेबनि धरि अनुपलब्ध छल। आखर (राजकमल विशेषांक)मे जीवकान्त अपन निबन्ध 'मे राजकमल चौधरीक पंक्ति उद्धृत कएने छथि -- एक गोटा उत्साही युवक ओकरा ('पाथर-फूल' उपन्यासकें) प्रकाशित करौलनि, मुदा ककरो कहला पर जे उपन्यासक अश्लीलताक कारणें प्रकाशक बन्हा जेताह, प्रकाशित मैटर ओ (प्रकाशक) डैमेज करबा देलनि। -- मुदा सुकर भेल जे दू बर्ख पूर्व तारानन्द वियोगी ओहि उपन्यासक एकमात्र प्रति कतहुँसँ नष्ट-भ्रष्ट स्थितिमे उपलब्ध केलनि। सम्पूर्ण पोथीमे दीवार

महाशय आर-पार एकटा भोकाँड़ क' देलखिन। ओही स्थितिमे ओकर छाया प्रति करवा कए बीचसँ पंक्तिमें जोड़ल गेल अछि। जोड़ल शब्दावलीमे राजकमलक शैली आ गरिमा अक्षुण्ण रहि सकल -- से कहब कठिन अछि, मुदा एते तय अछि जे उपन्यासक रसबोधमे कोनो बाधा उपस्थित नहि होइत अछि। एकर अलावा आओरो एकाध उपन्यासक चर्चा अछि, मुदा तकर कोनो सूत्र एखन धरि उपलब्ध नहि भेल अछि।

कहल जा चुकल अछि 'आदिकथा'क समय धरि सेहो मैथिलीक पाठक समाजक बोध-शीर्ष आ विचार-फलक उर्ध्वमुखी नहि भेल छलनि, एकदम सपाट भूमि पर जर्जर परम्पराक खुट्टीसँ बन्हाएल घूमि रहल छलनि। पूर्ववर्ती रचनाकार सेहो कम प्रयास नहि केलनि। कविताक क्षेत्रमे कतोक गोटए अपन योगदान देलनि। कथा आ उपन्यासक क्षेत्रमे कांचीनाथ झा 'किरण' आ हरिमोहन झा स्त्री आ विवाहसँ सम्बन्धित मिथिलाक जड़ियाएल समस्या पर नजरि द' चुकल छलाह। वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', 'पारो' आ 'नवतुरिया'मे एहि गन्हाएल वैवाहिक पद्धति पर समधानि क' चोट क' चुकल छलाह। तथापि समाज व्यवस्थाक पाखण्ड आ अयथार्थ आदर्शक चाँगुर एहि समाजकें जकड़ने छल, स्वाधीनता प्राप्तिक दशक भरि बादहु मिथिलाक लोक एहि वैवाहिक पद्धतिक प्रति घृणा आ विरोधक भाव नहि अवधारलनि। चुतुर्थिएक राति 'पारो' सन बालिकाक संग पति स्थानीय वृद्ध राक्षस द्वारा बलात्कार अथवा 'सुशीला' सन उद्दाम यौवनसँ भरल सुकामिनीक यौन-प्रताड़णाक प्रति किनकहु मोन खिन्न नहि भेलनि। पंजी प्रथाक विकृतिक रूपमे भेल एहेन बेमेल विवाह, बाल-वृद्ध विवाह आ बहु-विवाहक कारणें वृद्ध अथवा स्वर्गवासी जमीन्दारक कठमस्त जवान स्त्रीक संग रमणेच्छा सबकें रहै छलनि, गाछमे पाकल लताम देखि कौआ जकाँ दू लेल मारि अएबाक लालसा सबकें होइ छलनि, मुदा ओहि युवतीक मोन आ सम्बेदनासँ किनकहु कोनो मतलब नहि छलनि। छद्म आ अतिशयोक्तिसँ भरल मिथिलाक जीवन-पद्धतिक इएह विडम्बना छल। विवाहेतर सम्बन्ध रखबासँ परहेज नहि छलनि, भेद खुजि जएबाक डरें आतंकित रहै छलाह। एहेन समाजमे सुशीला आ देवकान्त अपन मोनक समर्थन कोना करितथि -- उपन्यासकारक सोझाँ ई पैघ समस्या छल। आदर्श आ मर्यादाक जर्जरतासँ आच्छन्न अइ प्रवृत्तिक कारणें उपन्यासकार 'आदिकथा'कें सुखान्त नहि बना सकलाह। सम्भवतः इएह कारण थिक जे बाबा यात्री 'पारो'क दुर्दशासँ व्यथित भेलाह, उग्र नहि। रचनाकारक व्यथासँ पाठककें सामान्यतया उग्र हेबाक चाही, मुदा यात्री देखलनि जे समाज एखनहुँ उग्र

नहि भेल । आठ बर्खक बाद फेरसँ यात्री 'नवतुरिया'कें ठाढ़ केलनि ।

मिथिला क्षेत्रक एहेन जड़ मन स्थितिक समाजमे कोनो प्रगति चेतनासँ सम्पन्न रचनाधर्मी लोकक मानसिक उद्वेलनक कल्पना कएल जा सकैत अछि । निर्दयी सासु, सुमति, मनुष्यक मोल, पुनर्विवाह, चन्द्रग्रहण, कन्यादान आदि पूर्ववर्ती उपन्यासमे मिथिलाक स्त्रीक दुर्दशाक चित्रण भेल, मुदा चित्रणक स्वरूपसँ स्त्री-चेतना आ स्त्रीक दुर्दशाक प्रति पुरुषक वैचारिक उद्वेलनक कोनो उद्यम एहि जनपदमे नहि देखल गेल । स्पष्टतः ई दोष रचनाकारक नहि, रूढ़िग्रस्त मैथिल समाजक धर्मान्धताक छल । 'पारो'आ 'आदिकथा'मे सेहो स्पष्ट विरोध अइ कुरीतिक प्रति नहि देखाइत अछि, मुदा 'पारो'क यौन उत्पीड़न और 'सुशीला'क यौन प्रताड़णसँ पाठकक मोन खिन्न होइत अछि । संख्यामे थोड़े सही, मुदा 'बिरजू'क क्रोध आ 'देवकान्त'क व्यथाक सहयात्री अवस्से बनैत अछि । ई समय समाजक बदलैत मनस्थितिक छल । उपन्यासकार अपन मोनक नहि क' सकलाह, मुदा संकेत देलनि -- समाजक बदलइत धार्मिक नैतिक मान्यतादिक एहि संक्रमित कालमे (आदिकथा)'कॉमेडी' नई बनि सकल, मात्र एक अपूर्ण 'ट्रेजेडी' रहि गेल । इएह समकालिक यथार्थ थिक । लोक प्रेम करइए, प्रेमपात्रक लेल बेकल रहइए, मुदा, संस्कारक ससरफानी तोड़ि नई पबइए । इएह आदि-आदिसँ चल अबइत कथा थिक, आदिकथा थिक ।...

मिथिला क्षेत्र भारतक एकटा एहेन भूखण्ड थिक जतए परस्पर विरोधी आचरण आ व्यवस्था निःशंक भ' कए विकसित भ' रहल अछि, होइत रहल अछि । पर्याप्त संख्यामे उद्दाम प्रवाहक नदी अछि, बाढ़िक कारण ओकर प्रवाहमे उद्दाम गत्यात्मकता अबैत अछि, प्रति वर्ष कोसीक बाढ़ि, गंगाक बाढ़ि, बागमती, कमला आदि नदी सभक बाढ़िक कारण तीव्रतासँ नदी-नालाक दिशा, स्थान परिवर्तित होइत रहल, जमीनक तल परिवर्तन होइत रहल... मुदा एहि प्रबल प्रभावकारी प्राकृतिक परिदृश्यक प्रतिकूल एतएक जीवन-यापन आ आचरण शिथिल, सुस्त, आ आरामपसन्द बनल रहल । गत्यात्मकतासँ निर्लिप्त, यथास्थिति पर अतीव आग्रह ।... विद्वताक लेल मिथिला क्षेत्र पुरातन कालहिसँ नामी-गिरामी रहल अछि । विद्वता आ प्रगतिशीलता आपसमे सहयात्री होइत अछि, अर्थ-धर्म-काम-मोक्षक परिभाषा बुझितहि मनुष्यमे उदारताक प'ट खुजैत अछि, आ कलुष मेटाइत अछि । मुदा, मिथिलामे सब कथूक अछैतो एहि समस्त सद्वृत्तिक लोपे लोप रहल, उनटे रूढ़ि, पाखण्ड, धर्मान्धता, अस्पृश्यता आदि भावना जड़िआएल रहल । जीवन विरोधी जर्जर व्यवस्थाक अनुपालनमे

अपन इच्छा आ नैतिकताकें मारैत रहल, फोंक मर्यादाक प्रदर्शन हेतु छद्म जीवन प्रक्रिया चलैत रहल। अइ छद्मक प्रति जड़िआएल आग्रह एतेक बढ़ल छल, जे छद्मे वास्तविकता लगैत रहल। छद्मक आँचर हटएबाक अर्थ मर्यादाक अतिक्रमण बूझल जाए लागल। राजकमल चौधरीक समस्त रचना संसार अइ छद्मेक अनावरणमे लागल रहल। आदिकथा उपन्यास सेहो, तकरे प्रमाण थिक। समाज ओहिसँ पहिने कनेको प्रगति-बोधसँ युक्त भेल रहितए, तँ सम्भव छल जे सुशीला आ देवकान्तक आदिकथा दुखान्त नहि भ' कए सुखान्त भ' जइतए।

‘आदिकथा’ उपन्यासक अप्रतिम प्रभावोत्पादकताक मुख्य कारण ओहिमे प्रयुक्त गद्य सेहो थिक। राजकमल चौधरीक गद्य रचनामे एकटा खास बात रहैत अछि, जे ओ अपन मन्तव्य राख’ लेल घटनावलीक कोनो शृंखला नहि तकै छथि; छोट सन कोनो प्रसंगक चारू भर एकटा परिवार, समाज अथवा मण्डली ठाढ़ करै छथि; ओकर आचरणकें ओकर मानसिक व्यापारसँ जोड़ैत जाइ छथि; अन्ततः अइ तरहक चरित्र-चित्रणे हुनकर मन्तव्यकें आकार, रचनाकें पूर्णता, अभिप्रायकें सफलता, आ प्रभावकें उत्कर्ष दैत अछि। आदिकथा उपन्यासमे मोटा मोटी घटना तँ एतबे अछि जे कोनो विपत्ति-यात्रामे सुशीला आ देवकान्तक भेंट होइ छनि, बीचमे सब तरहक राग अनुराग चलैत अछि, आ अन्ततः ओ भेंट, ओ अनुरक्ति एकटा अयथार्थ आदर्शक रक्षामे पानि पर लिखल आखर जकाँ मेटा जाइत अछि। मुदा ई सम्पूर्ण ताना-बाना किछु खास-खास तरहक चरित्रसँ बुनल गेल अछि, ओहि चरित्रेक माध्यमसँ राजकमल चौधरी अइ उपन्यासकें अपन समयक एकटा महत्वपूर्ण उपन्यासक रूप देलनि अछि। आदिकथा, एकटा दुखान्त प्रेमकथाक प्रमाण होइतहु समकालीन समाजक मार्मिक आ बेधक दृश्यक कोलाज थिक, जाहिमे पंजी प्रथा, सामन्ती संस्कार आ सामाजिक पाखण्ड पर चोट अछि; जमीन्दारिएक जड़िसँ निकलि कए जमीन्दारी प्रथाक विरोध परिवर्तन-चक्रक सार्थकता साबित केलक अछि। समस्त पद-प्रतिष्ठा-सम्पन्नताक अछैत मिथिलामे स्त्री लेल कोन तरहक सोच-पद्धति अपनाओल जाइत रहल अछि, तकर स्पष्ट चित्र बनि सकल अछि।

आदिकथाक मुख्य पुरुष चरित्र छथि -- अनिरुद्ध बाबू, कुलानन्द, महानन्द, ज्योतिषी लघुकान्त, आ देवकान्त। किछु गौण पात्र सेहो छथि -- डाक्टर वैद्यनाथ, धर्मशालाक मैनेजर, खवास इत्यादि। मुदा हिनका लोकनिक कोनो चारित्रिक विकास उपन्यासक कथाभूमिमे नहि भेल अछि। लघुकान्त ज्योतिषीक अवतारणा सेहो सामाजिक धर्मान्धता, पाखण्ड, भीरुता, छद्म आ निर्लज्जता देखएबा लेल भेल

अछि । धरमपुरवाली, अर्थात् सुशीला, अर्थात् देवकान्तक सोनामामी, अर्थात् कुलानन्द, महानन्दक सबसँ छोट सतमाइ कामोत्तेजनामे, अथवा कोनो मादक पदार्थक सेवनसँ बेहोश छथि । प्रयोजन छलै हुनकर सेवा-परिचर्या अथवा चिकित्साक, मुदा ज्योतिषी जी एकटा जवान स्त्रीक कामोत्तेजक बाँहि-पाँजरक स्पर्श पएबा लेल, कुत्सित लिप्ता तृप्त करबा लेल, अपन फोंक अस्मिता समाजमे ऊँच करबा लेल, आ लोक पर अपन पाखण्डक मनोवैज्ञानिक दबाब बढ़एबा लेल घोषित करै छथि, जे सुशीला पर ओएह प्रेतनी सवार छनि, जे तीन बख पहिने हुनका हरिद्वारमे भेटल रहनि -- ई बात, ज्योतिषीकें भगवती कहि देने छनि... । मुदा उपन्यास मध्य राजकमल चौधरी एहेन एकहु छद्म चरित्रकें क्षमादान नहि देलनि अछि ।... जे प्रेतनी छलहे नहि, तकरासँ मान-मनुहार ज्योतिषी करैत रहलाह, श्वसुर स्थानीय होइतहुँ, नजरिए आ स्पर्श टासँ सही, सुशीला सन रसवन्तीक रसपान करैत रहलाह, एही बीच हुनकर पोल खुजि गेल, ओ नाँगरि सुटका क' पड़एलाह ।

अइ चरित्रक प्रवेश उपन्यासक कथाभूमिमे अचानक भेल अछि । हिनकर अवतारणा नहियो होइतए तँ मूल कथा पर एकर कोनो असरि नहि होइतए । मुदा जें कि उपन्यासक गति एकरैखिक नहि होइत अछि, बहुत रास साँगह-पाती संग नेने चलैत अछि, कही तँ उपन्यास कम्प्यूटरक नॉर्टन एण्टी वायरस होइत अछि, अथवा मलाहक महजाल होइत अछि, जे सौंसे समाज व्याधि, अथवा सौंसे पोखरिक माछ, काछु, साँप, सनगोहि, सौंसि, नकार समेटने चलैत अछि । अही प्रक्रियामे राजकमल चौधरी 'आदिकथा'मे कथा तँ कहलनि अछि मामि-भागिनक अनुवित्तक; मुदा बीच-बीचमे समस्त सामाजिक व्याधिक इलाज करैत गेलाह अछि । ज्योतिषी लघुकान्तक पाखण्ड उजागर करब आ समाजकें अन्धविश्वाससँ मुक्त करब आवश्यक छल, तँ लघुकान्तक अवतरण भेल । एहि अवतारणा लेल कोनो संयोग-कथा नहि गढ़ल गेल, सहजतासँ ओ मूलकथाक अंश बनि गेल अछि -- से उपन्यासकारक विशिष्ट कौशल थिक ।

महानन्द सामन्ती खानदानक नव उम्रक युवक छथि । अनिरुद्ध बाबूक छोट बेटा, सुशीला सन सुकामाक सतौत बेटा, कुलाकानन्दक सहोदर आ देवकान्तक ममियौत । छूआ-छूत, वर्ग संघर्ष समाजसँ मेटा देबाक आग्रही आ सामाजिक कुरीतिक उन्मूलनक श्रेय लेब' लेल तत्पर अपरिपक्व विद्रोही । हिनकर परिचय लेल उपन्यासकारक पंक्ति उपयोग करी तँ -- 'महानन्दक शरीरमे एखन समाज-सुधारक रक्त-प्रवाह दौड़ि रहल छइन । उर्दू-भाषामे एकटा कड़वी छइ -- नब मुसलमान सतरह बेर नामज पढ़इए -- से महानन्द सतरह बेर नामज पढ़ए चाहइ छथि । चाहइ छथि जे

युग-युगान्तरक धार्मिक संस्कारकें विद्रोहक एक्के धक्कासँ तोड़ि दी।' -- महानन्द जमीन्दारी संस्कारसँ उबिया तँ गेलाह अछि अवस्से, परिवर्तन चाहै छथि, ताहि लेल उद्यमो करए चाहै छथि, मुदा चेतना जाग्रत नहि छनि। महानन्द समकालीन मिथिलाक प्रतिक्रियावादी नौजवानक प्रतिनिधि जकाँ एहि उपन्यासमे ठाढ़ छथि, जे लक्ष्य निधार्ण आ संधान-समायोजन कएनहि बिना व्यवस्था विरोधमे लागि जाइ छथि। परिवर्तनक एतब टा बाट बूझल छनि जे आँगनमे तथाकथित निम्नजातीय लोक पात ओछा कए खा लिअए।... नितान्त अपरिपक्व आ क्षणोन्मादी लोक छथि महानन्द। अवज्ञा आ चिन्तनविहीन विरोधक संग परिवारसँ भिन्न भ' जएबाक बात सोचै छथि। महानन्दक आचरणक चित्र एक दिश मिथिलाक युवा वृन्दक वास्तविक मानस लोकक परिचय दैत अछि, तँ दोसर दिश ओहि वर्गकें सुचिन्तित विरोधक प्रेरणा आ ललकार सेहो।

अनिरुद्ध बाबू रामपुर गामक सामन्ती संस्कारक उच्च कुल-वंश, जाति-पाँजिक विशिष्ट लोक छथि। चारिम पनमे प्रगल्भा, कामातुरा स्त्रीक पति भेलाह। एक पुत्रवती पत्नीक स्वर्गवास, आ दोसर पत्नीसँ एक पुत्र तथा एक पुत्रीक प्रापतिक पश्चातहु तेसर विवाहक लोभ सम्बरण नहि क' सकलाह, अधेर होएबा धरि ओहि पत्नीकें पुष्पवती नहि क' सकलाह। स्वयं साठि पार क' कए मामिला मोकदमामे तल्लीन रहै छथि। खाएब-पीब, रास-विहार, ज'र-जमीन, म'र-मोकदमाक बाद समय बचै छनि तँ सर-कुटुमक आदर आ नवोढ़ा पत्नीक आज्ञा-पालनमे लगबै छथि। अपन कौलिक संस्कार आ पूर्वजक अकबालक गर्वसँ फूलल रहै छथि। एहिसँ बेसी हुनकर कोनहुँ आचरणकें उपन्यासकार महत्व नहि देलनि अछि। जमीन्दारी सन रुग्ण व्यवस्थाक एक वृद्ध या रुग्ण व्यक्तिकें एही तरहेँ कोनो नव चेतनाक कथामे उपेक्षा कएल जेबाक चाही छल। 'गहरी मार कबीर की, दिल से दिया निकाल।' अतीत-व्यतीतक फेण्टेसीमे भोतिआइत आत्महीन लोककें वस्तुतः एहिसँ बेसी महत्व नहि देल जेबाक चाही। अन्ततः उपन्यासक पाठककें अनुमान तँ होउ, जे मानवेच्छाक प्रति अनुदार आ सम्वेदनहीन लोकक इएह दुर्गति होइत अछि। भौतिक सुखमे मुग्ध रहताह, मुदा पहाड़ी नदीक जीवन्त धारकें, कामेच्छाक ज्वालामुखीकें बान्हि क' रखताह। धिक्कार ...

कुलानन्द अनिरुद्ध बाबूक पहिल स्वर्गीया पत्नीक एकमात्र पुत्र छथि। वयस करीब-करीब अपन छोटकी सतमाइक बराबर छनि। मूल कथाक विस्तारमे हिनकर उपस्थिति थोड़ेक सहायक भेल अछि। अपना समयक मेधाहीन छात्र आ

नाटक-नौटंकी कम्पनीक कलाकार-कलारिनीक संग बौआ कए ऊर्जस्वित जीवन समाप्त केलनि, आब गाममे पैतृक सम्पति कूटि कए भाँग आ विलासमे जीवन बितबै छथि। कायर, क्रोधी, आ अय्याशी प्रवृत्तिक पात्र छथि। द्रौपदी सन सुशील स्त्रीक देवता छथि। स्त्री जातिकें पुरुषक आश्रित आ गुलाम बुझै छथि। पत्नी तवाह रहै छनि। खून-खुनामय धरिक स्थितिमे पहुँचि जाइवला तामसी छथि। क्रोधमे किछु क' लेताह। नाच-नटुआमे लिप्त रहताह। देवकान्तक प्रति अपन सतमाइक अनुरक्ति नीक नई लगै छनि। समाजक लोक तँ इहो कहबामे संकोच नहि करै छनि जे कुलानन्द अपन स्त्रीकें नैहर पठा क' सतमाइ संग रहै छथि। पिताक मृत्युक तत्काल बाद ओ सुशीलाकें अपन आश्रित बूझए लगलाह, हुनकर गहना जेवर बेचि कए अय्याशी करब हुनकर स्वभाव भ' गेलनि, मुदा सतमाइक उचितो खर्च पर आँकुश लगाएबाक प्रवृत्ति आओर उग्र भ' गेलनि। लम्पट एहेन जे सुशीला संग तीर्थ कर' गेलाह तँ हुनकर आचरण देखि धर्मशालाक मैनेजर धरि सुशीलाकें कुलानन्दक लम्पटपनीक कथा कह' अएलनि।

एकटा सामन्ती संस्कारक व्यक्तिक कुलमे आओर केहेन सन्तान होइतए! सम्पति छलनि तँ पिता सामाजिक स्वीकृतिक संग लम्पटपनी केलकनि, समय बदलल तँ कुलानन्द ओकरा आओर विकृति धरि पहुँचौलनि।

अइ उपन्यासमे राजकमल चौधरी जमीन्दार परिवारक सदस्य लोकनिकें ज्यामितीय आकृति पर ठाढ़ क' कए सामन्ती संस्कार, पंजी-प्रथा आ मिथिलाक स्थगित चिन्तन प्रणालीक धज्जी उड़ा रहल छथि। एहेन विकृत, वीभत्स रूप भरिसके कतहु भेटए। महानन्द, कुलानन्द, सुशीला-तीनू त्रिभुजक तीन कोण पर ठाढ़ छथि। केन्द्रमे बैसल छथि स्वयं अनिरुद्ध बाबू, बेबस, लाचार, खानदानी पराक्रम आ कौलिक मर्यादाक गोबर गीजैत। आ बाहरमे ठाढ़ छथि देवकान्त। त्रिभुज आ त्रिकोण-दुनूसँ सम्बेदना, एक कोन पर अनुरक्ति, मुदा प्रवेश वर्जित, अमर्यादित...। विचित्र हाल छल मिथिलाक! अशक्य अनिरुद्ध बाबू केन्द्रमे रहितहु, कतहु नहि रहलाह। अनिरुद्ध बाबूक देहावसान होइतहि जमीन्दारी पालो थमै लेल कुलानन्द केन्द्र दिश लपकै छथि। त्रिभुज टूटि जाइत अछि, मुदा देवकान्त तथापि बहरइए रहि जाइ छथि। एकटा क्रोधी, नशेरी आ लम्पट पतिक पत्नी द्रौपदी कतहु नहि छथि, किछु नहि छथि। ई मिथिलाक आदर्श आ मर्यादा छल, जकरा, राजकमल चौधरी जीवन लेल अयथार्थ मर्यादा साबित केलनि।

नायक देवकान्त सुशिक्षित, निविष्ट, कर्मनिष्ठ आ ज्ञानी युवक छथि। हाइ

कोर्टमे कार्यरत विशिष्ट व्यक्तिक पुत्र आ प्रतापी रईसक पौत्र छथि। कलाप्रेमी, कलाकार, प्रतिष्ठित, साहसी, उदार आ परोपकारी। सुशीलाक रुग्ण पति अनिरुद्ध बाबूक टूटल गाड़ी कमलदहमे फँसल छलनि, ओ लोकनि के छथि, तकर सूचना देवकान्तकें नहि छलनि, तथापि हुनका सहयोग देब; सुलतानगंजमे नाहसँ डूबैत दम्पतिकें बचाएब; कुलानन्दक संग सुशीलाक प्रवासक जानकारी रहितहु, हुनका आर्थिक सहयोग देब -- ई सब आचरण देवकान्त उदारता आ मनुष्यताक परिचायक थिक। एकर अलावा देवकान्तक गम्भीर आ जिद्दी स्वभावक चित्रण सेहो भेल अछि। मुदा देवकान्तक जितसँ हुनकर अपन जे किछु बिगड़ि गेल हो, आनक किछु नहि बिगड़लनि।

परंच मूल बात अछि सुशीला आ देवकान्तक अनुरक्तावस्थाक मनोविश्लेषण। अइ विश्लेषणमे उपन्यासकार सहजहिं चमत्कृत करै छथि। अइ अनुरक्तिक कथाकें माँसल आ उन्मादक बना क' पाठकक कामेच्छा आ कुत्सा बढ़बै लेल नहि; समाज व्यवस्थामे चलैत अयथार्थ आदर्श आ मर्यादाक प्रति पाठक/भावककें उद्देलित करै लेल। एहि चित्रणमे राजकमल चौधरीक मनोविश्लेषणात्मक शिल्प अत्यन्त प्रभावकारी साबित भेलनि अछि। उपन्यासतँ मानव जीवनक यथार्थक आख्यान होइत अछि, जाहिमे घटना चक्र आ स्थान-काल-पात्रक आश्रय लेल जाइत अछि। मूल कथाक संग-संग कतोक आनुषंगिक कथा अबैत अछि आ अइ सब क्रियामे चरित्र-चित्रणक अमूल्य योगदान होइत अछि। चरित्र-चित्रणक माध्यमे कथानकमे प्रवाह अबैत अछि आ लक्ष्य प्राप्तिक बाट सोझाइत अछि। उपन्यासक पात्रक चारित्रिक फलक जतेक सोझाएल रहत, ओकर अभिक्रिया आ आन पात्रक संग कथोपकथन स्पष्ट आ गत्यात्मक हैत। जें कि कोनो व्यक्तिक एक-एक आचरण ओकर मानसिक हैसियतक परिचायक होइत अछि, चरित्र चित्रणमे मनोविश्लेषणक महत्व सर्वोपरि होइत अछि।

स्वातन्त्र्योत्तर कालक भारतीय साहित्यमे एहेन देखल गेल अछि जे रचनाकार लोकनि अपन हरेक पात्रक आचरण ओकर मनोविश्लेषण करैत अंकित केलनि अछि, राजकमल चौधरी अइ काजमे सर्वाधिक अग्रगामी, प्रयोगधर्मी आ नवतामूलक साबित भेलाह अछि। चरित्र चित्रणक प्रसंग प्रेमचन्द सेहो एहि तथ्यक समर्थन दै छथि जे चरित्र चित्रण जतेक स्पष्ट, गतिशील आ विकासमान रहत, उपन्यास ओतबे बेसी प्रभावकारी हैत। प्रेमचन्द इहो स्वीकारलनि जे मनोवैज्ञानिक सत्यक आधार पर कथा उत्तम कोटिक हैत। राजकमल चौधरीक सम्पूर्ण कथा संसार तँ मनोविश्लेषणसँ भरल अछि, आलोच्य उपन्यास 'आदिकथा'क तँ मूल आधारे मनोविश्लेषण अछि।

कहै लेल ई कथा सुशीला आ देवकान्तक प्रेम कथा थिक, मुदा दू मेंसँ एको कखनहुँ किनकहुँ मुँह फोड़ि कए नहि कहलखिन जे हम अहाँसँ प्रेम करै छी। सौँसे समाजमे केओ ई नाहि घोषित केलनि जे दुनूमे प्रेम अछि। समाज, आ कि कुलानन्द, आ कि हरिनगर वाली (अनिरुद्ध बाबूक दोसर पत्नी, सुशीलाक माँझिल सौतिन, महानन्दक माइ, कुलानन्दक सतमाइ) अइ अनुरक्तिकें मोने मोन छिनरपन मानलनि। मुदा, ई कथा एकटा दुखान्त प्रेम-कथा थिक। सम्पूर्ण कथा सबहक मोनेमे बनैत, बढ़ैत रहल। पात्रक व्यक्तित्व, प्रवृत्ति, क्रिया-कलाप, रागात्मक मनोवेग आदिक चित्रणसँ घटना चक्र, परिस्थिति आ परिवेश सुगठित आ प्रभावकारी भेल अछि। पात्रक इच्छा-अनिच्छा, पसिन-नापसिन, क्रोध-घृणा-प्रेम, राग-अनुराग, भोगेच्छा आदिसँ कथानकमे स्वाभाविकता आ विश्वसनीयता आएल अछि।

कोनो मनुष्य प्रेम करए, घृणा करए, मारि करए, समर्थन आ विरोध करए, पूजा करए, व्याभिचार करए—ई सबो टा आचरण ओकर जीवन दर्शनसँ निर्धारित होइत अछि, जकर जानकारी ओकर मनोविश्लेषणसँ भेटैत अछि। परिवेश, प्रशिक्षण, संस्कार, प्रतिभा, अनुभव आदिक समन्वित प्रभावमे कोनो व्यक्तित्व अपन जीवन दर्शन दिढ़ करैत अछि; मुदा मनुष्य जाति जेँ कि सामाजिक पशु थिक, कतोक परिस्थितिमे ओकर समस्त जीवन-दर्शन विवश भ’ जाइत अछि।

मनोविज्ञान कहैत अछि जे कोनहुँ क्रियाकें निष्पादित करबामे कर्ताक धारणा महत्वपूर्ण होइत अछि। मनुष्यक आजन्मक संस्कार, अतीतक समस्त विसरल घटना, जीवन भरिक अनुभूति ओकर अवचेतनमे विराजमान रहैत अछि, समय पाबि कए ओएह सब बात ओकर प्रवृत्ति, आचरण आ धारणाकें निर्देशित करए लगैत अछि। आदिकथा उपन्यासक विभिन्न चरित्रक मनोविश्लेषणमे ई समस्त तत्व प्रभावी अछि। एहि उपन्यासक रचनाकाल धरि भारतीय स्वाधीनताक एक दशक बीत चुकल छल। मुदा मिथिलाक लोक—की पण्डित, की मूर्ख; की सामन्त, की मजूर...आदिम सभ्यताक मानसिकतामे जी रहल छल। पुरुषवादी अहंकारक एहेन फोंक प्रदर्शन तँ आदिमो युगमे नहि छल, जतए स्त्रीकें बच्चाक जन्म देब’ बला मशीन; पुरुषक कामेच्छा अथवा कुत्सा शान्त कर’ बाला यन्त्र; घर-अंगना सम्हार’ वाली परिचारिका; आ पुरुषक मुँहें प्रशंसा सूनि पुलकित रह’ वाली पोसुआ पशुक अलावा आओर किछु नहि बूझल जाइत हो। आसुरी भोग-विलास आ ढोंग-पाखण्ड-अन्धविश्वास-धर्मभीरुताक प्रवंचनामे सौँसे मिथिला डूबल छल। जखन कि सौँसे देशक प्रगतिशील समाजमे जीवनक जटिलता, विचित्रता पर चिन्तन-मनन

फैलसँ भ' रहल छल। लोक आधुनिक भावबोधसँ जीवनकेँ देखए लागल छल। मानव जीवनक उज्ज्वल आ कलुष भाव पर तुलनात्मक चिन्तन होअए लागल छल। एहना समयमे मैथिलीमे प्रभावकारी उपन्यास लिखबाक एकहि टा शिल्प भ' सकै छल--से छल मनोविश्लेषणात्मक चरित्रांकनसँ वस्तु स्थितिकेँ नाँगट करबाक कौशल। हमरा मनोविश्लेषण केने हरिमोहन झा 'कन्यादान'मे मैथिलक विदूषकीय आचरणक धज्जी उड़ा देलनि, मुदा मैथिल लोकनिकेँ ओहेन प्रहारक व्यंग्य, हास्य बुझेलनि। आचार्य प्रवर लोकनि उदारतापूर्वक हुनका हास्य सम्राटक उपाधि द' देलखिन।

वस्तुतः 'आदिकथा'क कथ्यो एहने अछि जे मनोविश्लेषणक अलावा दोसर कोनो सरिआएल बाट ताकलो नहि जा सकै छल। यौवनक अटट दुपहरियामे कोनो स्त्रीकेँ निश्चित रूपेँ कोनो सम्पूर्ण पुरुषक छाहरि चाही; पुष्पवती-फलवती हेबा लेल आतुर अथवा मुदित-पुलकित हेबा लेल उत्सुक-उत्फुल्ल कोनो हरियर लताकेँ कोनो मजगूत डारिक आसरा चाही। सुशीला एहने उत्तप्त स्त्री आ एहने अलसाएल लता छथि; हुनका देवकान्त चाही छलनि मुदा अनिरुद्ध भेटलखिन; चाननक गाछ चाही छलनि, मुदा भाँटि-भँगुरैया भेटलखिन। स्त्रीक जीवनमे अर्थसँ बेसी सार्थक बहुत किछु होइत अछि, से बात मैथिल प्रतिनिधि अनिरुद्ध, हुनकर स'र-कुटुम, सम्बन्धी-सरोकारी नहि बूझि रहल छलखिन; एते धरि जे कुलानन्दोकेँ तकर खाहिस नहि भेलनि।

गम्भीरतापूर्वक देखल जाए तँ अइ उपन्यासक अधिकांश घटनाचक्र चरित्रक मोनहिमे घटित भेल अछि। सभ क्यो अपन मन्तव्य संकेतहिमे व्यक्त केलनि अछि, किनकहु धारणा स्पष्ट बोलीमे स्पष्ट नहि भेल अदि।

अनिरुद्ध बाबू सन अशक्य आ वृद्ध जमीन्दारक भौतिक सम्पदा, सांसारिक असार-पसार, सतौत सन्तानक कारणेँ बेटा, पुतोह, धी, जमाइ, नाति-पोतासँ भरल-पुरल घर पाबियो कए कामदग्धा सुशीला अतृप्त छथि। अतृप्त कामेच्छाक दमन हेतु हफीमक सेवन करए लगै छथि। उत्तेजनामे कएल आचरणक सूचना पाबि लजा जाइ छथि, कामातुरा प्रवृत्तिक होइतहु सामाजिक आदर्श आ कौलिक मर्यादाक पालनमे अपनाकेँ ध्वस्त करैत रहै छथि, नहुँ-नहुँ जरबैत रहै छथि। रुग्ण पति संग यात्रा करैत अचानक देवकान्तसँ भेंट होइ छनि। देवकान्तक यौवन, स्वास्थ्य, पराक्रम, कला प्रेम, उदारता आ सौहार्द देखि हुनकासँ मोने प्रेम करए लगै छथि। परम शिष्ट, धीर, प्रशान्त सुशिक्षित, उदार आ दृढ़ प्रतिज्ञ देवकान्त मोनमे सेहो प्रेमक तरंग अहिना

उठैत अछि। आ, दुनूक प्रेमांकुर तीव्र गतिसँ पसर' लगैत अछि। मुदा जहिना दुनूक मामि-भागिनक सम्बन्ध-कथा सुनिश्चित होइत अछि। प्रेमक उद्वेग भीतरे-भीतर सुनग' लगैत अछि। किन्तु प्रेम होइत अछि आगि, ओकरा पर काँच-कोचिल जते झोंपन देल जाए ओ आओर तीव्रतासँ, अधिकाधिक उत्तापसँ प्रज्ज्वलित होइत अछि। प्रेमक ई तीव्र उत्ताप सामाजिक मर्यादाक जर्जर सूत्रक कारणेँ अन्नतः सुखान्त परिणति धरि नहिँ पहुँचैत अछि। मुँह फोरि कए अइ प्रेमाभिव्यक्तिक अवसर धरि दुनूकें हाथ नहिँ अबै छनि। दुनू भीतरे-भीतर सुनगैत रहै छथि। मनोविश्लेषणक आधार पर दुनूक आचरणमे देखल जा सकैत अछि जे दुनूक मोनमे आगि कोन गतिसँ धधकि रहल अछि।

सौन्दर्यक प्रति आकर्षण मनुष्यक स्वाभाविक आचरण होइत अछि। चाहिओ क' कोनो व्यक्ति सौन्दर्यक उपेक्षा नहिँ क' सकैत अछि। सौन्दर्य बोध, आ अनुरक्ति कर्मक अपन शास्त्र आ विधान होइत अछि, जे अलग-अलग प्राणीक आन्तरिक-बाह्य परिस्थिति आ मनोदशासँ निर्देशित होइत अछि। भूखसँ व्याकुल कोनो बरदकेँ लहलहाइत घास, आ कि सूखल नार-पुआरमे सौन्दर्य भेटतै, अनुरक्ति हेतै। मुदा घास अथवा नार-पुआरक घेराव, आ कि बरदक गरदनिक पगहा, आ कि मुँहमे लागल जाबी...अइ भोगक बाधक बनि सकैत अछि।...सुशीला परम सुन्दरी छथि। वयस, तदनुकूल सौन्दर्य, यौवन, आचरण, ओज, भाव आदि भादबक बाढ़ि जकाँ, उमड़ैत मेघ जकाँ उपरौझ क' रहल छनि। ब्राह्म मूहूर्तमे निश्चिन्त निद्रा आ अलस मुद्रामे हुनका सूतल देखि देवकान्त दिव्य-दर्शनक अनुभव केलनि। नारी-सौन्दर्यक एहन दिव्य-दर्शन हुनका जीवनक पहिल अवसर छल, एकटा सुमधुर स्वप्न छल। वस्तुतः --हृदय कोनो सीमा-बन्धन नहिँ मानै'ए। कहियो नहिँ मानि आएल अछि।-- देवकान्तक मोनमे प्रेमक लहरि उमड़ैत रहै छनि। सुशीला मामीसँ भेंट करबाक इच्छा होइत रहै छनि, तै ले' मातृक (रामपुर) जाए पड़तनि। मुदा रामपुर नहिँ जेताह। इच्छा होइ छनि, मुदा अपनहिँ इच्छासँ भय होइ छनि। मातृक-पैतृक मर्यादा पर, अथवा सुशीला मामीक शील पर, अथवा अपन व्यक्तित्व पर आँच लागि जेबाक भय होइ छनि। मोने-मोन सुनगैत रहै छथि, मुदा मातृक जा क' सोझाँ-सोझी सुशीलाकेँ कहि नहिँ अबै छथि--मामी, सोना मामी, हमरा अहाँसँ प्रेम भ' गेल अछि। हम अहाँ बिना नहिँ रहि सकब। अहाँ सन ऊर्वर ऊर्जस्वित, उत्तेजनामयी, कामातुरा रूपवतीक वेगमय ज्वारकेँ हमर वृद्ध, अशक्य मामा नहिँ थाम्हि सकताह, हम थाम्हि लेब। अहाँ हमरा संग चलू। संग-संग रहब। जीवनकेँ जराएब नहिँ, स्वाहा नहिँ करब, जीब...।

भय होइ छनि। मर्यादा आ सामाजिक आदर्शक। आदर्श आ मर्यादा रक्षाक चपेटमे जरैत रहबाक ई उत्कट विवरण वस्तुतः पाठकक मोनमे अइ अयथार्थ आ फोंक परम्पराक प्रति घृणा उत्पन्न करैत अछि।...तुलना करैत देखी तँ अइ मामिलामे सुशीला मुखर छथि, देवकान्त परम लजकोटर, संकोची आ डरपोक छथि, सुलतानगंजमे अजगैबीनाथ मन्दिरक सीढ़ी चढ़ैत एकहि संग सुशीला सोचै छथि कहना पण्डाक मुँहसँ बहराए जे ‘पति-पत्नीक ई जुगल जोड़ी अमर हो’, मुदा देवकान्त भयभीत छथि जे जँ पण्डा एहेन बात कहि देलक तँ लाजें मारि जाएब।... सम्पूर्ण उपन्यासमे एहेन प्रसंग कतोक बेर आएल अछि, जतए देवकान्त संकोची आ सुशीला मुखर बुझाइ छथि। उपन्यासकारेक पंक्तिमे कही तँ वस्तुतः --*सुशीलाक जीवन भेलइन, समुद्रक मिलनाकांक्षामे मन तीव्रगामिनी गंगाक जीवन। देवकान्तक जीवन भेल, अशान्त चिरप्रतीक्षा विमग्न, तरंगायित किन्तु बाह्यरूपें परम अचंचल समुद्रक जीवन। दुनू जीवन एक अबहू आशाक पातर तागसँ बान्हल...उपमा देबाक ई कौशल परम व्याख्येय आ परम प्रशंसनीय अछि।*

दरअसल अइ कथामे पात्रे टा नहि, प्रेम शास्त्रक सूक्ष्मतम मनोविज्ञानक चित्रण सेहो अत्यन्त व्यापक, चमत्कृत आ प्रभावकारी रूपें भेल अछि। देवकान्त सोना मामीसँ तते बेसी प्रेम करए लागल छथि, जे आओर ठाम ओ जते बेसी व्यावहारिक आ बुद्धिमान होथु, अइ प्रेम-कथामे अत्यन्त डरपोक, तर्कवादी आ संशयवादी भ’ गेल छथि। सौँसे कथामे सुशीलाक समर्पण, सुशीला पर अपन अधिकार, समर्पणक संकेत आ आदर्श-मर्यादाक गुणा-भाग करैत रहि जाइ छथि। खन सोचै छथि जे सुशीला पर हुनकर की अधिकार छनि? फेर सोचै छथि, अधिकार नहि छनि तँ अपन बीमार पतिकें छोड़ि, हुनकर सेवा-सुश्रूषा लेल ओ किए पहुँचि गेलीह? खन सोचै छथि--नारी कोनो पुरुखसँ प्रेम नइँ क’ सकइए? एक पुरुख पर विश्वास नइँ क’ सकइए? की नारी मात्र छलना थीक?--ओना विरह आ व्यथाक उद्रेकमे एहि तरहक बात कोनो व्यक्ति जँ सोचि लिअए तँ तकरा स्त्रीक प्रति अमर्यादित धारणा नहि बुझबाक थीक। ओ स्वयं एकर उत्तर दै छथि जे सोना मामीक आचरण मिथिलाक ‘सभ्यता, संस्कृति, परम्परा आ धर्मक एकटा परम उदाहरणक अभिव्यक्ति’ थीक। ‘*सोना मामी पूर्णतः भारतीय सम्पूर्णतः मैथिल नारी छलीह... जे अपने टूटि जाएत, मुदा, परम्पराक पातर सँ पातर तागकें नइँ तोड़त...।*’

अलगसँ कहबाक प्रयोजन नहि जे कोनो प्रवृत्ति, आचरण आदिकें राजकमल चौधरी जातिवादी, सम्प्रदायवादी अथवा लिंगवादी नहि मानै छथि। एक दिश सोना

मामीक प्रति एतेक उच्च धारणा रखै छथि दोसर दिश अपन मामक दोसर स्त्री हरिनगरवालीक कनबाक कला देखि सोचै छथि--कहब असम्भव अछि जे हरिनगरवाली कानि रहल छलीह, अथवा अभिनय कए रहल छलीह, नाटक पसारि रहल छलीह। प्रत्येक मैथिल-स्त्री जकाँ इहो कानब-शास्त्रमे पूर्ण सुरक्षा, पारंगता छथि। ओहुनाँ कानब-खीजब, घाना पसारब, नाटक करबाक अभ्यास सभ स्त्रीकें रहइ छइ। स्त्री चाहे इन्द्रजीत मेघनादक, शव लग विलाप करइत दानव कन्या सुलोचना सुन्दरी हो, अथवा अर्जुन पुत्र अभिमन्युक शव लग विलाप करइत पाण्डव कुलवधू उत्तरा-सुन्दरी, सभ स्त्रीकें कानब अबइ छइ, कलात्मक ढंगसँ रुदन करए अबइ छइ।

अइ उपन्यासमे जतबे विविधता पुरुष पात्रमे अछि, ताहिसँ कनेको कम स्त्री-पात्रमे नहि अछि। मुख्य स्त्री पात्र सब छथि -- सुशीला, हरिनगरवाली (अनिरुद्ध बाबूक तृतीया आ द्वितीया), द्रौपदी (कुलानन्दक पत्नी)। हरिनगर वालीक उपस्थिति सौंसै उपन्यासमे ओहने कुटिल आ नाटकीय अछि, जकर चर्चा उक्त उद्धरणमे अछि। मैथिल स्त्रीक समस्त दुर्गुण हिनकर आचरणमे भरल छनि। फूटल ढोल, बिन पेनीक लोटा, चुगलखोरनी, भाभट पसारैमे दक्ष, सौतिनकें दुष्चरित्रा साबित करबामे तल्लीन स्त्री छथि, हरिनगरवाली।

सौतिया डाह, दुष्ट स्त्रीक आचरण, दोसरकें बदनाम करबाक नेतसँ एकसँ एक दुर्वृत्तिक कल्पना आ आरोपन मिथिलाक कतोक स्त्रीमे पाओल जाइत अछि, सौतिया डाहमे तँ ई कला आओर निखरि उठैत अछि। हरिनगरवाली सुशीला पर कलंक मढ़ै छथि--*धरमपुरवाली त डाइन अछि, डाइन! गाछ हँकइए!...दुइयो दिन भिन्न भेनाँ नईं भेल छलइ आ स्वामीकें खा गेल...आब सुतन्त्र भए गेल अछि...खूब छिड़हड़ा खेलाएत... भागिनक संगे पटना-दिल्ली करत...के रोकइबला छइ...कुलानन्दो त' तेहने छथि। अपन स्त्रीकें नैहर पठा देलइन...आब सतमाइक सेवामे रहइ छथि।--एहेन अश्रद्ध आ अवांछित गारि बर्दाश्त कइयो क' सुशीला कोनो तरहें विचलित नहि होइ छथि। विपरीत परिस्थिति अएला पर मिथिलाक बुझनुक स्त्री सागर सन गहीँर आ गम्भीर भ' जाइ छथि। सुशीला बड्ड गहीँर आ बड्ड गम्भीर स्त्री छथि। समयक उतार-चढ़ाव आ हवा-पानिक रुख निके ना बुझै छथि। उपन्यासकार अइ उपन्यासमे हुनकर इएह छवि प्रस्तुत कएने छथि। सामाजिक बन्धन आ वैयक्तिक क्रूरता वस्तुतः एते कठोर होइत अछि, जे बिना कोनो दया-धर्मक ओ फूल सन कोमल इच्छाकें मोचारि क' राखि दैत अछि। कुटिल आदर्शसँ भरल सामाजिकता इएह थिक, जाहिमे मानवीय सम्बेदनाकें अक्षुण्ण रखबाक तर्क ताकब*

व्यर्थ थिक। आदि कथाक इतिवृत्ति एकर उदाहरण थिक।

सुशीला अइ कथाक आधार चरित्र थिकीह। कथाक आरम्भमे जखन देवकान्त आदर्श, मर्यादा, प्रतिष्ठा, पाप-पुण्य, नेत-नियम सभसँ डेराएल मामि संगे प्रेम निवेदनमे संकोच करै छलाह; समस्त उत्कट आकांक्षाक अछैत इत-उतमे फँसल छलाह; सुशीला चारि डेग आगू बढ़ि कए मुखर भेलीह; आ अपन कतोक आचरणसँ पूर्ण समर्पणक कतोक संकेत स्पष्ट रूपें देलनि। मुदा विधवा भेलाक बाद कौलिक परम्पराक अनुकूल हुनकर सतौत बेटा कुलानन्द हुनक रक्षक, प्रतिपालक भेलखिन; आ सुशीलाक भावना, मनोवेग, आन्तरिक इच्छा, साहस सब पर सामाजिक अयथार्थ आदर्शक बन्धन विजय प्राप्त क' लेलक; ओ कुलानन्द संग रहि कए अपने दुटैत रहलीह, जर्जर मर्यादाक पातर सूतकें नहि तोड़ि सकलीह।

वृद्ध, अशक्य जमीन्दार अनिरुद्ध बाबूक तेसर पत्नी सुशीला अनिन्द्य सुन्दरी छथि; आ दावानलक ज्वाला सन, अथवा समुद्री तूफान सन, अथवा भदबरिया कोसीक प्रवाह सन वेगमय यौवनक स्वामिनी छथि; अइ वेगकें सम्हारि सकबाक सामर्थ्य हुनका पतिमे नहि छनि। देवकान्तक यौवन, शिष्टता, सौन्दर्य आदि देखि ओ हुनका दिश अनुरक्त भेलीह। एहि अनुरक्तिमे अभिलाषा दैहिके टा नहि, प्रेमक आदर्श स्वरूप सेहो अर्थवन्त छलनि। इमानदारीसँ देखी तँ एहि उपन्यासमे राजकमल चौधरी द्वारा सृजित कथाक नायिका सोना मामी, अर्थात् सुशीला सन स्त्री; कोनो कल्पना-लोकक स्त्री नहि छथि, समाजमे एहेन कैकटा सोना मामी ओहि समयमे अही विवरणक संग भेटि सकै छलीह; एहेन स्त्रीक मनोविश्लेषण कोन मनोवैज्ञानिक करत? सुशीलाक जीवन की छल? सुन्दरि, स्वस्थ, जवान, साहसी, बुझनुक, सच्चरित ... की छथि सुशीला? एक दिश देवकान्त सन समुद्रमे मिलनक आकांक्षामे मग्न तीव्रगामिनी गंगा छथि; देवकान्तकें पैघ-पैघ प्रेमाभिसिक्त पत्र लिखै छथि; अपन अनेक आचरणमे अनुरक्तिक संकेतो दै छथि; रुग्ण पतिकें अस्पतालमे छोड़ि देवकान्तक परिचर्यामे पहुँचि जाइ छथि; हफीम खएलासँ अथवा कामोन्मादसँ बेहोश हएबाक कथा अपन प्रेमी देवकान्तसँ नुकएबाक प्रयास करै छथि। वृद्ध पति अनिरुद्ध बाबूक प्रति पूर्ण समर्पणक भाव स्पष्ट करै छथि। हुनका रुग्णावस्थामे देखि गाड़ी-बरद पर लादि अस्पताल ल' जाइ छथि; पति जखन अपना लेल वृद्ध वयसक चर्चा करै छथिन तँ विरोध करै छथि-- 'सै बेर अहाँकें कहि देलजँए, हमरा सोझाँमे अपनाकें वृद्ध नई कहल करू...।' अर्थात् अपन जवानी पर एतेक आत्मगर्विता जे वृद्ध पतिक पत्नी नहि कहावए चाहै छथि। वैधव्य प्राप्तिक पश्चात जखन सतबेटा

कुलानन्द संग तीर्थवासमे जाइ छथि, तँ धर्मशालाक मैनेजरक मुँहें अपन उच्छृंखल सतबेटाक अनाचारक कथा सुनि कुपित होइ छथि आ मैनेजरकें धोपि कए विदा करै छथि। देवकान्त जखन बलजोरी अपन बासा पर आनि लै छथिन, तँ एकहि संग प्रतिवाद आ विलाप करै छथि।... एकटा सच्चरित्र स्त्रीकें मर्यादा आ मनोवेगमे; जीवनक सार्थकता आ सामाजिक आदर्शमे तालमेल बैसब'मे कोन-कोन यातना भोगए पड़ै छनि -- एकट अनुमान कते कठिन अछि!

सुशीलाक जीवनक पर्यवस्थिति पर उपन्यासकार नशेरी, विलासी, कुलानन्दक विचार व्यवस्था अत्यन्त सटीक आँकने छथि। सुशीला जखन बेहोश भेलीह, आ लोक हल्ला केलक जे ओ आत्महत्याक निमित्त माहुर खा नेने छथि, तखन सद्पात्रक कोटिमे नहि रहलाक अछैतो भाँगक निशाँमे भसिआएल सुशीलाक सतौत बेटा कुलानन्द, जे हुनकर समवयसी छथिन, सोचै छथि--*किअए नइं सुशीलाकें मरि जाए दिअनि? जीबिए कए ओ कोन सुख काटि रहल छथि? जीवनक कोन आशा, कोन इच्छा कोन आवश्यकता आइ धरि हुनका पूर भेल छनि? आबे कोन पूर हेतइन? एहेन अपूर्व सुन्दरी छथि, जेना साक्षाते सरस्वती अथवा लक्ष्मी रहथि। मुदा, भाग्य केहेन दैबक मारल। एकटा बेटा-बेटी नइं छनि, जे तकरे मूँह देख कए जीबि लितथि।... सतमाय बाँचि कए की करती...?*

कुलानन्द सन कुपात्रक मोनमे जाहि स्त्रीक प्रति एते व्यथा छनि, तिनका मादे ओहि कालक समाजकें आ सामाजिक मर्यादाकें कोनो दरेग नहि भेलनि। जेना कि पहिनहुँ कहल गेल, एहि पाछू मिथिलाक सामाजिक पर्यवस्थितिक पैघ योगदान छल। राजकमल चौधरी सेहो कथाक पृष्ठभूमिक संकेत दैत सूचना देने छथि जे मिथिलाक लोककें कथा एखनहुँ मोन छै जे एक दिश बंगालक तुर्क नवाब आ दोसर दिश दिल्लीक फिरोजशाह तुगलकक सेना मिथिलाकें घेरि कए सब वस्तु अपहृत, बलत्कृत करै छल। दिल्लीक सेनाक, बंगाल-आसाम-जएबाक बाट आजुक सहरसा-पूर्णियाँ छलै। बंगालक नवाबी पलटन बिहार, अवध आ दिल्ली दिश धावा देवा लेल अही बाटें जाए। अइ इलाकामे कोनो पैघ युद्ध कहियो नहि भेल मुदा बंगालक नवाबी सल्तनत आ दिल्ली शासनक संघर्षसँ सर्वाधिक हानि अही क्षेत्रकें भेलै। जीतल सिपाही प्रसन्नताक आवेगमे इनार पर पानि भरैत ग्रामवधूकें उठाकए घोड़ा पर चढ़ा लिअए; हारल सिपाही दुखक उद्वेगमे खरिहानमे काज करैत किसानकें तरुआरिसँ छपाठि दिअए। पराजयक पीड़ा आ विजयक उल्लास अइ क्षेत्रक जनताकें बिना कोनो युद्धमे गेनहि भेटल छै। अइ क्षेत्रमे यायावरी संस्कृति, बताह निश्चिन्तता,

ग्राम देवी पर अथाह भरोस, जीवनक प्रति उन्मुक्त आलस्य भाव अही कारणें विकसित भेल; आ से उत्तरोत्तर एक पीढ़ीसँ दोसर पीढ़ीमे अबैत गेल ।

घनघोर आपद स्थितियहुमे अथाह निश्चिन्तता, धार्मिक आ ईश्वरीय शक्ति पर निश्चेष्ट मुदा दिढ़ आस्था, उत्कट आलस्य, भोजन-मैथुन-दरबारी वृत्ति दिश आसक्ति, चुगलखोरी, चाटुकारिता, दमित वासनाक विकृति, दुष्टाचारसँ भरल मनोवृत्ति, स्त्री-जातिकें भोगक यन्त्र बुझबाक प्रवृत्ति, शिथिल चरित्र...सबो टा आचार मैथिल लोकनिकें अपन अही इतिहाससँ भेटल हो--से बहुत सम्भव अछि ।

सुशीला सन स्त्रीक कमी ओहि समय धरि नहि छल मिथिलामे । मुदा पर्यवस्थितिक की कएल जाए! प्रेमातुर सुशीला, देवकान्तक प्रति प्रेम निवेदनक कतोक संकेत भरि उपन्यासमे दैत रहलीह अछि । देवकान्त जखन मातृक अबै छथि, तँ घर-आँगनमे सभक समक्षे दुनूक सम्भाषण आ कथोपकथनमे ई स्पष्ट होइत अछि । देवकान्त बड़े चतुराईसँ ठोकि बजा क' अपन वक्तव्य दै छथि, मुदा सुशीलाक वाक्चातुर्य देवकान्तकें अनुत्तरित क' दै छनि । जखन देवकान्त कहै छथि -- *'आब मामी जतबा दिन कहतीह, रामपुर रहि जाएब ।'* तँ सुशीला तत्काल देवकान्तक आँखिमे अपन दून्नू आँखि रखैत जवाब दै छनि-- *'हम कहब जे भरि जन्म अही ठाम रहि जाउ त रहि हएत?'* देवकान्त निरुत्तर भ' जाइ छथि । एक उखराहा बितलाक बाद हुनका जवाब सूझै छनि, आ तखन साँझमे आबि क' कहै छथिन -- *'सत्त मोनसँ किओ ककरो राखए चाहत त' ओ कहिओ भागि नई सकइ छइ ।'* अइ सम्भाषण पर सोना मामी लजाइ छथि; अपन समस्त जमा-पूँजी भागिनकें अर्पित करैत रहै छथि । ई समर्पण वस्तुतः महादेवक प्रति पार्वतीक सर्वस्वार्पणसँ कम प्रशस्त, कम पवित्र, कम मूल्यवान नहि अछि । मुदा समाजक नजरिमे ई परकीया समर्पण थिक, अनाचार आ व्यभिचारक समर्पण थिक । समाजक नजरिमे सुशीला आ अनिरुद्ध बाबूक विवाह बर्बरता, अनाचार आ व्यभिचार नहि थिक । हाय रे मिथिला, हाइ रे मैथिल !

मुदा समस्त चातुर्य, समस्त धैर्य, समस्त शीलक अछैत सोना मामी अपन मान-सम्मानक प्रति सावधान आ कतोक बेर उग्र सेहो देखाइ छथि । हफीम खएबाक हिनकर कथा जखन हरिनगरवाली देवकान्तकें सुनबए लगै छथिन, तँ सुशीला तामसँ तरंगि उठै छथि, ज्वालामुखी जकाँ आगि-अंगोरा मुँहसँ निकल' लगै छनि; मुदा क्रोधमे प्रेमाधारकें कोनो तरहें आहत नहि करै छथि । शरबत पीबाक हिनकर आग्रह जखन देवकान्त नहि मानै छथिन, तँ ई अपमानित होइ छथि । चोटाएल नागिन सन उधिआइ छथि, मुदा देवकान्तकें आहत नई करै छथि, लोटा गिलास फेकि कए क्रोध

शान्त क' लै छथि ।

मिथिलाक स्त्री जीवनक जतेक सूक्ष्म अध्ययन राजकमल चौधरीकें छलनि, आ हिनकर रचना संसारमे जतेक सूक्ष्म विवरण उपस्थिति अछि, हमरा जनैत कोनो स्त्रियो एते सूक्ष्मतासँ ओहि मनोविज्ञानकें नहि पकड़ि सकल हेतीह । सुशीलाक विवरणमे तँ लगैत अछि लेखक अपन सम्पूर्ण कला लगा देने छथि । सम्पूर्ण कथामे सुशीलाक चरित्रक बहुमुख अंकित करैत कतहु एकटा खोंच-नोछाड़ नहि लागए देने छथि । जे सुशीला भागिनक प्रति एहि तरहें समर्पित छलीह जे पति-पत्नीक रूपमे अमर हएबाक आशीर्वाद चाहै छलीह, से पतिक देहावसानक पश्चात, कुलानन्दक आश्रित भ' गेलीह । कुलानन्दक कोनो बात पर 'नई' कहब बिसरि गेलीह । स्वामीक मुँहें कहियो वर्जना नई सुनिहारि सुशीला, कुलानन्दक समस्त वर्जनाक पालन करए लगलीह ।...

सोनमामी संग देवकान्तक वार्तालाप, मानवीय मनोवेग, प्रेमपाशमे बान्हल दू व्यक्ति, आ सामाजिक मर्यादा, पारम्परिक सम्बन्धक खुट्टीमे जकड़ल मानवक मोनक उद्वेगकें रेखांकित करैत अछि । व्यवस्था आ मर्यादाक बन्धन आ मनोवेगक स्वच्छन्द-कामनामे कतहु एक आरि-खेत नहि होइत अछि । एहि दृश्यकें 'आदिकथा'क घटना-सूत्र रेखांकित करैत अछि ।

सुशीलाक एहेन चरित्रांकन मिथिलाक अयथार्थ आदर्श आ अव्यावहारिक मर्यादाकें नाँगट केलक अछि, एहिसँ रूढ़ि-पोषक लोकनि व्यथित जते भेल होथि, मुदा मैथिलीमे नव-चिन्तन पद्धतिसँ उपन्यास-कथा लिखबाक परम्पराक नव सूत्रपात भेल आ नव पीढ़ीक, नव दृष्टिक उद्योगसँ मिथिलाक ई बर्बरता समाप्त भेल—से प्रसन्नताक बात थिक ।

राजकमल चौधरीक दोसर उपन्यास थिक -- आन्दोलन । एहिमे नाटकीय शैली पर विशेष जोर अछि । मुदा उपन्यास इहो मनोविश्लेषणात्मक अछि । नाटकीय शैलीक गद्यमे मनोविश्लेषणक सुविधा ताकब आसान नहि होइत अछि, मुदा राजकमल चौधरीक कथा-कौशलकें ई सब सुविधा तकबामे कोनो तरदुत्त नहि होइ छनि । सुगठित शिल्पमे सामाजिक यथार्थक मौलिक चित्र अंकित करब हिनकर रचनाक मूल स्वभाव थिक । व्यतीत आ वर्तमानक घटना-चक्रक आश्रयसँ सम्भाव्य दिश इशारा एहेन कौशलसँ करै छथि जे ओ रचना एकदम सहज आ नागरिक जीवनक दैनिक व्यवस्था जकाँ लगैत अछि ।

कथानक एकटा बेरोजगार युवक 'कमल'क कलकत्ता महानगरमे रोजगार प्राप्ति हेतु प्रवेश आ कलकत्ता प्रवासक क्रममे उपस्थित विभिन्न दृश्यावलोकनक क्रमबद्ध नियोजन पर आधारित अछि। मूल कथा भाषा-प्रेमसँ ओत-प्रोत मैथिली आन्दोलनक विविध चरणकें रूपायित करैत अछि। विवरण-विस्तारमे एहि आन्दोलनक नग्न स्वरूप सोझाँ अबैत अछि। मैथिल जातिक मत-भिन्नता, ईर्ष्या-द्वेष, धोखाधरी इत्यादि अपूर्व कलात्मकतासँ चित्रित भेल अछि। कथा-सूत्रक विस्तारमे पात्रक अवतारणा आ उपकथाक समावेश परम विश्वसनीय आ सहज यथार्थक संग भेल अछि। उपन्यासकारक कहब छनि जे *आजुक मनुक्खमे तीन प्रवृत्ति मुख्यतः देखल जाइ'ए-- क्षुधा, आत्मरक्षा आ यौनपिपासा। एहन तीन प्रवृत्तिक चित्रांकन लेखकक प्रधान प्रयत्न रहल अछि।* -- वस्तुतः एहि उपन्यासमे ई तीनू प्रवृत्ति बेस फरिछ भेल अछि। उपन्यासक पात्रकें जाहि जीवन्त रूपें रचनाकार एतए ठाढ़ कएने छथि, ताहिमे मैथिल चरित्र आ मिथिलाक परिदृश्य पूर्ण विवरणक संग उपस्थित भ' जाइत अछि। राजकमल चौधरीक सृजन-कर्मक ई खास विशेषता थिक जे हुनका ओतए व्यक्ति आ व्यक्तित्व बड़े महत्त्वपूर्ण भ' उठैत अछि। व्यक्तिक जीवन-लीला, रहन-सहन, सोच-विचार, आहार-व्यवहारकें अंकित करैत ओ सम्पूर्ण परिदृश्य गढ़ि दै छथि। तँ राजकमल चौधरी द्वारा सृजित चरित्रक मानसिक उद्वेग आ भौतिक करतब पर विवेकपूर्ण दृष्टि राखि ली, तँ हुनकर सम्पूर्ण रचनाक समालोचना भ' जाएत। हिनकर सकल पात्रक आचरण आ मनोवेग, ओकर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, मानसिक हैसियतक परिचायक होइत अछि। कोन परिस्थितिक कोन मनोवेगमे मनुष्य कोन आचरण करै'ए--से पूरापूरी एतए व्यक्त होइत अछि। एहि तरहें चारित्रिक विश्लेषण करैत उपन्यासक मर्मकें बेसी नीक जकाँ बूझल जा सकैत अछि।

राजकमल चौधरीक सगरो रचना-विधानमे पात्रक सृजन आ चरित्रांकन स्पष्ट आ विलक्षण अछि, मनोविश्लेषण आधारित क्रिया-कलाप आ आहार-व्यवहार तार्किक आ समीचीन अछि। समस्त पात्रक जीवन-प्रक्रिया आ रहन-सहनमे मनोविश्लेषणक सुविधा छिड़िआएल रहैत अछि, जकर आधार पर ओकर अर्जित जीवन-दृष्टिक सूक्ष्म अध्ययन कएल जा सकैत अछि। कोनो व्यक्तिक चिन्तन-व्यवस्था कोन विवशता आ व्यवस्थामे निर्मित भेल; कोन क्रिया-कलाप ओ कोन परिस्थितिमे पूर्ण केलक-- से जानि सकबाक सुविधा मनोवैज्ञानिके धरातल पर स्पष्ट होइत अछि। चरित्रांकनक इएह उत्कर्ष आ इएह कौशल एहि उपन्यासक प्रभावकें वैराट्य

दैत अछि। भाषा, विषय, विवरण, शिल्प...सब किछु मानवीय, सहज, सामाजिक, जीवन्त, प्रामाणिक आ विश्वसनीय!

आन्दोलन उपन्यासक नायक 'कमल' मिथिलाक सुशिक्षित, परम विवेकशील आ प्रतिभावान युवक छथि। आत्म-स्थापनक उद्देश्येँ कलकत्ताक महानगरीय परिवेशमे बौआ रहल छथि। नीलू सन अल्प वयस किशोरी अथवा नवयुवतीक उन्मादित समर्पण अथवा अल्हड़ आमन्त्रण नकारि देलनि; मुदा वासनाक राक्षससँ मुक्ति पाब' लेल अन्हार आ बदनाम गली धरि चल गेलाह।

आदर्श आ सद्पात्रताक प्रतिमूर्ति भुवनजी मातृभाषा आ मातृभूमिक प्रसार-प्रगतिमे तल्लीन छथि, मुदा कोनो खास कारणेँ हुनकहुमे विचलन आवि गेल छनि। निर्मला सन अत्याधुनिक सुकामा, सुवर्णा स्त्री भुवनजीकेँ हिला दै छनि। भुवनजीक पत्नी निरक्षरा आ कुरूपा छनि। निर्मला जी सन सुकामा स्त्रीक यौवन, रूप लावण्य, आधुनिक चटक-मटक पर हुनकर लहालोट हैब स्वाभाविक आ यथार्थ थिक।

मानव सभ्यताक इतिहासक कहै'ए जे मनुष्य अपन विराट छवि ठाढ़ कर'मे तल्लीन रहै'ए, विराट भ' जाइ'ए, मुदा मानवीय कमजोरी ओकरा संग रहै छै। अइ उपन्यासमे उपन्यासकार भुवनजीक छवि अति विशिष्ट आ निविष्ट रूपमे ठाढ़ कएने छथि। मुदा जँ सएह टा रहितए, तँ भुवनजी कोनो दन्तकथाक नायक बनि जैतथि। समस्त वैशिष्ट्यक अछैत मानवोचित दुर्बलता रेखांकित क' कए उपन्यासकार वस्तुतः भुवनजी आ कमलजी-दुनूकेँ यथार्थसँ जोड़लनि अछि।

सुशीला बहुगामिनी स्त्री छथि, नित्य प्रति नव-नव पुरुखक बाँहिमे झूलए चाहै छथि। दोसर स्त्री छथि सुशीला, ओहो अनेक पुरुखक संगेँ समागम करै छथि। मुदा तें, दुनू स्त्री समान नहि छथि। पर-पुरुख समागम सुशीलाक विवशता छनि, अर्थोपार्जनक आधार छनि, जीवन-यापनक ठहार छनि, माइ-बाप संग अपन भरण-पोषण हेतु अन्न-वस्त्र चाही। देहे टा पूँजी छनि, तकरहि भेजबै छथि, कूटि-पीसि गुजर करै छथि। मुदा निर्मलाक विवशता अर्थाभाव नहि छनि। ओ कामातुरा छथि। यौन-पिपासासँ व्याकुल रहै छथि। कोनो सम्पूर्ण पुरुखक सम्पूर्ण भोग लेल तत्पर रहै छथि। ... एकटा देह बेचै छथि, एकटा देह बिलहै छथि। एकटा आत्मबुभुक्षाक तृप्तिमे कोनो नैतिक-अनैतिक काज लेल तत्पर छथि, दोसर यौनपिपासा शान्त करबा लेल उताहुल।

आन्दोलन उपन्यासक केन्द्र-बिन्दु थिक आत्मबुभुक्षा, यौनपिपासा, आत्मसुरक्षा। सत्य थिक, आ राजकमल चौधरीक मान्यता छनि, जे मानव जीवनक

आदिम आवश्यकता इएह तीन होइत अछि । ओना मनुष्य की, प्राणी मात्रक आदिम प्रवृत्ति इएह तीन टा होइत अछि । शेष सभ प्रवृत्ति—ईर्ष्या, द्वेष, राग-विराग, लोभ-लालच, पक्ष-विपक्ष, झंझट-फसाद, खून-खुनामय... सब किछु लोक एतए आवि कए, जीवन जीबाक क्रममे विकसित करै'ए; उल्लिखित तीनू प्रवृत्ति मनुष्य जन्महिसँ संग नेने अबैत अछि । अही तीनू प्रवृत्तिक निपटानमे किओ अपन छवि कुतुबमीनार सन ऊँच क' लैत अछि, किओ अपन कुतुबमीनार सन छविकें सड़ल पानिक नाली बना लैत अछि । *आन्दोलन* उपन्यासकें अइ आलोकमे देखब समीचीन थिक ।

उपन्यास उत्तम पुरुषमे लिखल गेल अछि । कथानायक कमलजी जीवन-संग्राममे जुटल छथि, आत्म-स्थापनमे लागल छथि; भाषाई आन्दोलनमे अपनाकें बलिदानी घोषित केनिहार मैथिल लोकनिक समस्त छद्मकें प्राथमिक आ मौलिक अनुभव जकाँ देखि-भोगि रहल छथि । मैथिल जातिक छद्म-पाखण्ड, राग-द्वेष, वासना आ नपुंसकताकें, आ एहि वृत्तिकें छपा रखबाक मनुष्यक कौशलकें निकेनाँ चीन्ह रहल छथि; इएह कथानायक अइ उपन्यासक कथावाचक छथि । कलकत्ता महानगरमे जीवन-यापन करैत विभिन्न आय-वित्त आ बुद्धि-वित्तक प्रवासी मैथिलक क्रिया-कलापसँ परिचित छथि । निर्मलाजी आ सुशीलाजी जाहि वर्गक मैथिल स्त्रीक प्रतिनिधि छथि, ताहि दुनू वर्गकें निकटसँ देखने छथि । कमलजीक नजरिमे *निर्मलाजी छथि क्लयोपेट्रा, रूपोद्धता, प्रति निशि नव प्रेमीकें साँपसँ कटबा क' मरबा दै वाली विकटकामा । सुशीला छथि निश्छल, निस्पन्द, क्रिया-शून्य, सभ किछु हेरएने बिसरएने रस्ता पर ठाढ़ि, जे केओ पुरुष आबए आ किछु टाका द' जाए! सुशीला छथि ओ नारी, जे नुका-चोरा क' नहि, धोखा-धड़ीसँ नहि, एकदम सफा-सफी अपन अस्तित्वकें बेचि रहल छथि!*

श्यामा नयनाभिरामा कुसुम-सुषमा-रंजिता सौख्यधामा नहि, देह पर मैल, फाटल साड़ी, ओछान पर पुरान, मँहकैत चद्दरि, आँखिमे निर्लज्जता, भाव-शून्य, निष्काम, पाथर बनि गेल पुतली । छि: छि:, सुशीला आ निर्मलाजीमे कोनो तुलना भ' सकैछ (*आन्दोलन*/पृ०. ३९)!

राजकमल चौधरीक रचना संसार पर बहुतो गोटे बहुत तरहक बात कहलनि अछि । हिनकर औपन्यासिक-कौशल पर कतोक गोटेकें एकसूत्रताक अभाव देखेलनि ।... समग्रतामे देखी तँ भारतीय नागरिक, अथवा मैथिल नागरिकक सम्पूर्ण जीवन परिदृश्य हिनका नजरिमे कौड़ी जकाँ जगजिआर अछि । सामाजिक जीवन व्यतीत करबा लेल संस्थापित समाज-व्यवस्था, भारतीय लोकतन्त्र, मानवीय

जीवन-पद्धति, जीवन-यापनक बुनियादी सीमा-शर्त, जिजीविषाक अपरिहार्य वृत्ति, मानवीय मनोवेग, मनुष्यक अभिलाषा, अस्तित्वक अविचल यथार्थ... सब बिन्दु, पर विरोधाभास आ विडम्बनाक जुलूस देखाइत अछि। राजकमल चौधरी अही जुलूसमे देखलनि जे सिद्धान्त आ व्यवहार, वचन आ आचरण, जीवन आ लेखनमे कोनो तरहक पारस्परिक सम्बन्ध-बन्ध, स्थापित नहि अछि। लोकतान्त्रिक व्यवस्थामे मानवीय सम्बेदनाक रक्षा हेतु जे आचार संहिता घोषित भेल अछि; अथवा मिथिलाक नैतिक शिक्षामे जे पाठ पढ़ाओल गेल अछि; तकर अनुपालन अइ भाग्य विधाता वर्गक कोनहु टा आचरणमे नहि भ' रहल अछि; आ व्यावहारिक स्तर पर जे भ' रहल अछि, से मानवीय जीवन पद्धति लेल कोनो अर्थ उपयोगी नहि अछि। एहि विचित्र विडम्बनाकें राजकमल चौधरी उठबैत रहलाह आ जस के तस रखैत गेलाह; अही कारणें हिनकर उपन्यास विडम्बनासँ भरल, परस्पर विरोधाभासी आचरणसँ भरल समाज-व्यवस्थाक चित्र-खण्डक कोलाज लगैत अछि। पारम्परिक पद्धतिसँ शिक्षित-दीक्षित समीक्षक लोकनिकें जें कि राजकमल चौधरीक उपन्यास अथवा कथामे कथासार अथवा कथानक नहि भेटै छनि, तें हुनका लगै छनि, जे एहि रचनामे एकसूत्रताक अभाव अछि। एहेन समीक्षक लोकनिकें प्रौढ़ शिक्षा निदेशालय द्वारा नवसाक्षर लेल प्रकाशित कहानीक पोथी पढ़बाक चाही, जाहिमे समस्या, समस्याक कारण आ समस्याक समाधान खोंसैत कहानी लिखल जाइत अछि आ अन्तमे पूछल जाइत अछि—त' अहाँकें एहि कहानीसँ की शिक्षा भेटल?

सत्य थिक जे वस्त्रक भीतर हरेक मनुष्य नाँगट होइत अछि। वस्त्र पहिरैत अछि परदा लेल। ओना तँ सबहक सब बात लोककें बुझले रहै छै। हरेक सन्तानकें बूझल रहै जे हम अइ दुनियाँमे कोना एलहुँ आ हरेक माइ-बापकें बूझल रहै छै जे ओ अपन सन्तानक विवाह किए करौलनि अछि। मुदा एकटा मर्यादाक खुट्टी छै, जाहिमे सामाजिक पशु बान्हल रहैत अछि। स्वातन्त्र्योत्तर कालमे, आ एम्हर आबि कए त' आओर बेसी, ई बात लागू भ' गेल अछि। मनुष्यक भौतिक नग्नता पर नहि, मानसिक आ वैचारिक नग्नता पर। सब व्यक्तिक स'ब बात स'ब कियो जनैत अछि, मुदा स'ब व्यक्ति अपन ओहि समस्त आचरण पर, वृत्ति पर परदा देबा लेल कोनो ने कोनो नैतिक बातक परदा देब' चाहै छथि। कहि नहि, मनुष्य स्वयंकेँ ठकबा लेल एते बेसी बिर्त्त किए रहै छथि! दुनियाँक लोक तँ सबटा बात बुझिते रहै छै।

मैथिली तँ आब संविधान स्वीकृत भाषा भ' गेल अछि, सन् 1957मे,

जहिआ ई उपन्यास लिखल गेल छल, से बात नहि छलै; मैथिली भाषाक अधिकार लेल खूब-बर्चा होइ छलै। प्रवासी मैथिल लोकनि शहर-शहरमे भाषाई समिति बनबै छलाह। ओही समितिक माध्यमे किछु गोटए अस्तित्व रक्षा करै छलाह, किछु अस्मिता निर्माण; किओ अपन राजनीतिक उत्थान करै छलाह, किओ अकादमीक उन्नति; किओ कुण्ठा मेटबै छलाह, किओ रास-विलास; मुदा थोड़े लोक लेल धन्न सन। किए तँ ओ भूखसँ व्याकुल रहै छल। कहाँ दन कुरुक्षेत्रमे भूख लगला पर गान्धारी अपन बेटा सभक लहासक ढेरी पर चढ़ि फल तोड़ए लागल छलीह। भूख, मनुष्यक विवेक आ सम्वेदनार्कें एहि तरहें आन्हर करैत अछि। एहना स्थितिमे भाषाक लड़ाइ लड़' लेल के जाएत? सोलह आना सत्य वचन थिक जे हरेक एहि तरहक आन्दोलनमे मुख्य रूपें लोक अपन-अपन लड़ाइ लड़ैत रहल अछि। संयोग थिक जे ई भाषाई आन्दोलन छल। जँ नहिओ रहितए तँ लोक कोनो आओर बाट ताकि लितए, जेना एखन लोक ताकि रहल अछि। भारतीय स्वाधीनताक बाद भारतीय नागरिकक विवेक एते बेसी आत्मकेन्द्रित भ' गेल, जे ओ समस्त आन्दोलनमे अपनाकें जोड़ि कए अपन लिप्सा आ कुण्ठामे तल्लीन भ' गेल। अपन स्थान तकबामे आ सुरक्षित करबामे लीन भ' गेल। स्वातन्त्र्योत्तरकालीन भारतीय लेखक मनुष्य जातिक अही वृत्तिकें उजागर करबामे लागल रहलाह अछि।

कलकत्ताक मैथिल समितिक भाषाई आन्दोलन, एहने आन्दोलन थिक, जाहिमे भुवनजी सगरो समाजमे बेस प्रतिष्ठित आ निविष्ट मानल जाइ छथि; मैथिल, मैथिली, आ मिथिलाक हित लेल बेस उदारतासँ काज करै छथि; लोक सब खूब मान-आदर करै छनि। मुदा ओएह लोक सभ जहिना सभा सोसाइटीक प्रेमिका, उदात-यौवना निर्मलाजीकें भुवनजी संग उठैत बैसैत देखै छथि कि सगरो मैथिल समाज चर्चा कर' लगैत अछि जे हुनकर अपन स्त्री महान कुरूपा छथिन तँ निर्मलाजीक आँचर कसि क' धएने छथि।

नीलू, विष्णुदेव ठाकुर संग सिनेमा देखब पसिन नहि करै छथि, मुदा अन्हार रातिमे जखन देह व्याकुल करै छनि, तँ निर्वस्त्र भेल कमलजीक अन्हार कोठलीमे पहुँचि जाइ छथि। सामाजिक यथार्थ आ दैहिक यथार्थक एहि तरहक निरूपण आन्दोलन उपन्यासकें ठोस, आ महत्त्वपूर्ण साबित करैत अछि। उपन्यासक कथाभूमि कलकत्ता थिक, मुदा कथाक जीवन पूर्ण रूपें मैथिल थिक। जीवन-यापन आ आत्म-स्थापन हेतु कलकत्ता शहरमे संघर्षरत मैथिलक स्वभाव, जागरूकता, आलस्य, उदारता, राग-द्वेष, मनोवेग, उन्माद, भाषा-प्रेम, स्वार्थ-सिद्धि हेतु चलाओल

भाषाई आन्दोलनक छद्म, आत्मविज्ञापन हेतु यत्र-कुत्र पाँखि पसारबाक ललक, फैंटेसी... समस्त स्थितिकें सूक्ष्मता आ मार्मिकतासँ एतए रेखांकित कएल गेल अछि। मैथिलीमे एहि कृतिकें पहिल राजनीतिक उपन्यास घोषित करबामे कोनो कोताही नहि हेबाक चाही। उपन्यासकार स्वयं एकरा *प्रथम राजनीतिक उपन्यास अथवा राजनीतिक पर्यवस्थितिमे लिखल गेल प्रथम वृत्तान्तक उपन्यास* कहलनि अछि।

समाज-व्यवस्थाक नियम अछि जे मनुष्य 'प्रभुत्व' आ 'प्रतिष्ठा' अर्जित करए चाहैत अछि। अही दुनूमे कतहु 'चरित्र' सेहो नुकाएल अछि। 'प्रभुत्व', 'प्रतिष्ठा' आ 'चरित्र'—ई तीनू पद व्यावहारिक जीवनमे बड़ अमूर्त सन अछि। ई तीनू वस्तुतः की थिक? केहन चरित्रक मनुष्यकें केहन प्रतिष्ठा भेटतनि? कतेक प्रतिष्ठा अर्जित केलासँ मनुष्यकें कतेक प्रभुत्व हएत? कतेक प्रभुत्व आ प्रतिष्ठाधारी व्यक्तिक चरित्र केहन हएबाक चाही?—अइ प्रश्नावलीक उत्तर कोनो समाजक आचार संहितामे स्पष्ट नहि अछि। मुदा लोक निरन्तर फिल्मिस्तानक 'मुन्ना भाइ' जकाँ लागल रहै'ए। अपन आचरणक श्रेष्ठताक व्याख्या अपना तरहें करैत रहै'ए। *आन्दोलन* उपन्यासक कमलजी, भुवनजी, निर्मलाजी, सुशीला, नीलू, हेम बाबू... सबहक आचरण देखि उपन्यासकार राजकमल चौधरीक मोनमे जे ओझराहटि उपजै छनि, तकरे उधार करबाक प्रयास एहि उपन्यासमे कएल गेल अछि। धन्य छथि ओ समीक्षक, जिनका अइ उपन्यासमे एकसूत्रताक अभाव बुझाइ छनि।...वस्तुतः मनुष्यक मूल प्रवृत्ति थिक जिजीविषा; आ तकर प्राथमिक शर्त थिक--रोटी, सेक्स, सुरक्षा। एहि तीनू आश्यकताक पूर्ति हेतु दुनियाँक प्रत्येक प्राणी चुड़ीसँ बाघ, बाघसँ नढ़िया, नढ़ियासँ मनुक्ख भ' जाइए। जीवनक समस्त छल, छद्म, ईर्ष्या, द्वेष, उदारता, ईमानदारी, त्याग, तल्लीनता, भय, साहस, स्पष्टता, प्रवंचना, खोशामद, ललकार, टोप-टहंकार, धर्म-पाखण्ड, नीति-विचार, दान-दक्षिणा, लूट-बटमार... आदिक स्वांग अही निमित्त करै'ए; सफल-असफल होइ'ए। सफलताक अहंकारमे उन्मादित रहै'ए, असफलताक कुण्ठामे गन्हाइत रहै'ए। बिसरि जाइ'ए जे अइ सफलताक मार्गमे ओ कतेक हीन भेल अछि, अथवा असफल होइत केतक नमहर भेल अछि। सम्पूर्ण 'आन्दोलन' उपन्यास मानव जीवनक अही जटिल-गुथीक गाथा थिक। हमरा जनैत अइ उपन्यासक आश्रय-वृक्ष 'मैथिल समिति' टा नहि रहितए तँ भाषा परिवर्तन क' कए एकरा सम्पूर्ण संसारक अथवा सम्पूर्ण मानवीय वृत्तिक कोनहुँ भाषाक उपन्यास कहल जा सकै छल।

मैथिलीमे तँ निश्चिते *आन्दोलन* उपन्यास एकटा नव शुरुआत थिक। आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल जएबाक अछैत एहिमे कतहु आत्मश्लाघा अथवा आत्मसंकोचक स्वाभाविक त्रुटि नहि आएल अछि। कथावाचक कमलजी कलकत्ता महानगरमे आत्म-स्थापनरत छथि, भाषाई आन्दोलनमे सहभाग-सहकार द' रहल छथि, आन्दोलनी परिवारक हरेक व्यक्ति लेल तटस्थ आ ईमानदार आचरण रखै छथि। सम्पूर्ण उपन्यासमे कतहु स्पष्ट नहि होए दै छथि जे ओ स्वयं किनका पक्षमे छथि। जे भुवनजी हुनका कलकत्ता महानगरमे पैर रोपबाक आधार देलकनि, नैतिक समर्थन देलकनि, स्नेह-प्रेम देलकनि, मान-सम्मानक मार्ग प्रशस्त केलकनि, तिनकहु लेल ओ कतहु पक्षपातक स्थिति अपन कथावाचनमे नहि आबए देलनि। नीलू, निर्मला, सुशीला... तीनू तीन आचणक स्त्री छथि; तीनूक खोंइचा छोड़ा क' राखि देलनि, मुदा किनकहु पर अपन निर्णायक वक्तव्य नहि देलनि। स्वयं बदनाम गली धरि गेलाह, तकरहु उजागर करबामे संकोच नहि केलनि। लक्ष्य संधान छलनि मानवीय वृत्तिक स्पष्ट नक्शा उतारबाक, से अइ तटस्थ भावे टासँ सम्भव छल। इएह कारणो थिक जे आइ आ आइसँ पहिनहुँ अइ उपन्यासमे मूल मानवीय वृत्तिक एते रास छवि देखाइत अछि, देखाइ छल। महानगरीय परिवेशक प्रवासी मैथिल द्वारा चलाओल जा रहल भाषाई आन्दोलन एहि उपन्यासक आश्रय-वृक्ष भने रहल हो, मुदा सम्पूर्णतामे ई मिश्रित चित्र खण्डक कथ्य-बहुल उपन्यास थिक, जाहिमे क्षुधा, आत्म-सुरक्षा आ यौन-पिपासाक चारू भर चित्रखण्डक समायोजन भेल अछि। तथापि कथ्य एकटा सुगठित कौशलसँ रचल यथार्थ उद्बोधित, समाज सम्मत, विश्वसनीय वृत्तान्तक रूपमे सोझाँ आएल अछि।

रचनाकालक दृष्टिँ 'आन्दोलन' 'आदिकथा'सँ पूर्वक उपन्यास थिक, मुदा विषय आ शिल्पक दृष्टिँ ई बेसी प्रगतिशील, आधुनिक, आ ऊर्ध्वोन्मुखी अछि।

कोनो उपन्यास मनुष्य, मानवीय जीवन, जनजीवनक सामाजिक व्यवस्था आ ओकर वातावरणक कथा कहैत अछि। एहि अर्थमे उपन्यासमे ठाढ़ मनुष्यक क्रिया-कलापहिसँ उपन्यासक गरिमाकें चीन्हल-बूझल जा सकैत अछि आ उपन्यासकारक रचना-दृष्टिक मूल्यांकन कएल जा सकैत अछि। अर्थात् चरित्र-चित्रण जाहि कृतिमे जतेक सन्तुलित आ स्पष्ट हएत ओहि कृतिक उद्देश्य आ वातावरणकें ओतेक स्पष्टतासँ बूझल जा सकत। सामान्यतया रचनाकार लोकनि अपन सृजित पात्रक चरित्र पर समग्रतामे अपन टीका दै छथि। केहन लोक छथि, कते पढ़ल छथि,

कोना कमाइ छथि, कोना खाइ छथि, की करै छथि...। चाही तँ सुविधा लेल एकरा व्याख्यापरक चरित्र-चित्रण कहल जा सकैत अछि, मुदा एहिसँ बेसी सुविधा होइत अछि, पात्रक आचरण आ कथोकथनक आधार पर ओकर चरित्र बुझबामे। एहिमे भावक लोकनि पात्रकें अपना नजरिँ चिन्हबाक चेष्टा करै छथि। प्रायः इएह कारण थिक जे नाटक, अथवा नाटकीय शैलीक कृतिमे चरित्र चित्रणक सुविधा बेसी भेटैत अछि। खास क' कए मनोविश्लेषणात्मक चरित्र-चित्रण करबाक पर्याप्त सम्भावना रहैत अछि। इहो कहब समीचीन होएत जे राजकमल चौधरीक रचनामे अकारण एते कथोकथन नहि रहैत अछि। नाटकीय शैलीक एहि उपन्यासमे पात्रक मनोविश्लेषणक प्रभूत व्यवस्था अछि। रचनाक नायक-नायिका आ सहयोगी लोकनि पारस्परिक वार्तालाप आ अपन क्रिया-कलापसँ जते तरहें अपन चारित्रिक सीमा अंकित करैत'छि रचनाकार स्वयं टीका द' कए ओते विस्तारसँ कहिओ नहि कहि सकै छथि। एहिसँ कृति संक्षिप्त, दीप्त आ प्रभावकारी सेहो होइत अछि। सम्भवतः इएह कारण थिक जे राजकमल चौधरीक उपन्यास आकारमे एते छोट होइत अछि आ प्रभावमे एते विराट। वार्तालापसँ मनुष्यक सम्पूर्ण व्यक्तित्व ठाढ़ भ' जाइत अछि। शिल्प, शैली, वाक्य-संरचना, शब्द-चयन, सम्बोधन-अभिवादन, विषय आ विषयानुरक्तिसँ कोनहुँ व्यक्ति अपन सम्पूर्ण सोच-समझ-आचरण, कौलिक आ व्यावहारिक संस्कार, आर्थिक-शैक्षिक-सामाजिक पृष्ठभूमि स्पष्ट करैत अछि। जेना आन्दोलन उपन्यासक पात्र सब कएने छथि।

भाँगक निशॉमे मातल कमलजीक कोठलीमे अल्पवयस नीलू अर्धनग्न अवस्थामे पहुँच जाइत अछि। ओहि अन्हार गुज्ज रातिमे बन्द कोठलीमे नीलू, कमलजीकें 'भैया' कहैत अछि, मुदा सर्वस्व अर्पित कए चाहैत अछि। स्पष्ट अछि, जे किशोर वयक उन्माद आ उत्तेजनमे नीलू 'सम्बोधन' आ 'क्रिया'क बीचक समन्वय बिसरि गेल अछि। जे कमलजी यौन पिपासा मेटएबा लेल देह-व्यापारमे लिप्त स्त्रीक खोली धरि पहुँचि जाइ छथि, से कमलजी भाँगक घनघोर निशॉमे मातल छथि, आ अन्हार गुज्ज रातिमे बन्द कोठलीमे समर्पित नीलूकें बुझा-सुझा क' आपस क' दै छथि (आन्दोलन/पृ. 50-51)। मैथिलानी वेश्याक ताकमे जखन कमलजी बनगामबालीक खोलीमे पहुँचै छथि तँ सम्पूर्ण नक्शा उनटि जाइत अछि, हुनक विषय-वासना करपूर जकाँ बिला जाइत अछि (पृ. 35-37)। अइ वार्तालापमे आ एहने कतोक वार्तालापमे व्यक्ति, समाज, व्यवस्था, वातावरण आ मनोवेगक जतेक स्पष्ट छवि अंकित भेल अछि, ततेक स्पष्ट करब आन कोनो माध्यमे

असम्भव छल ।

एतए नीलूक किशोरावस्था आ काम-पिपासा नीलूकें आन्हर क' देने अछि । 'भैया' सम्बोधनक बादहु यौनाचार प्रतिवेदन अनर्गल थिक, मुदा एतए नीलूक वयसोचित उन्माद आ अपरिक्वतामे उचितानुचितक विवेक नुका गेल अछि, जे सहज अछि, सम्भाव्य अछि । मुदा तें, नीलूक चरित्र घृणित नहि कहल जा सकैत अछि । अपरिपक्व रहितहुँ ओ सर्वस्व-अर्पण हेतु पात्र-चयनमे असावधान नहि अछि, भुवनजीक आवासीय परिसरमे आओर कतोक पुरुख, मैथिल पुरुख बिलमल छथि, तिनका संग ओ एना नहि केलनि; महानगरीय वातावरणक विकृतिमे ओ निर्मलाजी अथवा सुशीला नहि बनि गेलीह । नीलूक समर्पणकें अस्वीकार करबाक अर्थ कमलजीक नपुंसकता अथवा निष्काम वृत्ति नहि थिक । से रहितथि तँ कमलजी वेश्यालय नहि जैतथि । मुदा कमलजी कामातुर राक्षस नहि छथि । से रहितथि तँ ओ सुशीलाक राति किनलनि, हुनका संग सब किछु कइए क' आपस होइतथि । समस्त मानवीय दुर्बलताक अछैत मनुष्यक विवेक ओकरा नैतिक रूपें विराट बनबैत अछि । समस्त दुर्बलता आ सबलताक सीमा बूझब समयक नायककें वास्तविक स्वरूप दैत अछि आ ओकर चारित्रिक वैशिष्ट्य समकालीन समाजकें जीवन जीबाक दृष्टि आ नैतिक बल अनुसंधानक बाट देखबैत अछि । आन्दोलन उपन्यासक चरित्र चित्रण तकरहि उदाहरण थिक ।

वस्तुतः अपन रचनामे कोनो पात्रक सृजन केलाक बाद जँ रचनाकार ओकर स्वामी बनि जाइ छथि, चरित्रक सहज विकास नहि होए दै छथि, तँ ओ रचना सामान्यतया असफल भ' जाइत अछि, अपना समयक यथार्थसँ पृथक रहि जाइत अछि, रचनाक सत्य आ नायकक आचरण समाज सापेक्ष नहि भ' पबैत अछि । मुदा राजकमल चौधरीक रचनाक नायक-नायिका आ तकर सहयोगी पूर्ण रूपें स्वतन्त्र रहैत अछि, स्वेच्छाचारी नहि । ओकर चारित्रिक विकासमे राजकमल चौधरीक नियन्त्रण ओतबे रहैत अछि, जतबा घूमैत चाक पर राखल माटि पर कुम्हार नियन्त्रण रखैत अछि । अपन ब्रह्माक मात्र एतबहि टा नियन्त्रण पाबि ओ पात्र आ रचना महान भ' जाइत अछि । जेना *आदिकथा* आ *आन्दोलन* महान भेल अछि; *आदिकथा*क देवकान्त आ सोना मामी; *आन्दोलन*क कमलजी, भुवनजी, नीलू, निर्मला, सुशीला महान भेल छथि ।

*आन्दोलन*क प्रमुख पुरुष पात्र छथि—विष्णुदेव ठाकुर, मोदनारायण जी, नरेन्द्र झा, चन्द्रशेखर बाबू, हेम बाबू, सुदर्शन जी, भुवनजी, कमलजी आदि । किछु

अनाम-सुनाम सामूहिक पात्र सेहो छथि, जे अवसर-बेअवसर अपन वक्तव्यसँ, आ अपन क्रिया-कलापसँ अपन चरित्र आ मानसिक स्तरक परिचय दै छथि। विष्णुदेव ठाकुर, मोदनारायण जी आ चन्द्रशेखर बाबूक उपस्थिति कथा विस्तारमे ठाम-ठीम होइ छनि, मैथिलोचित प्रवृत्ति आ दुष्टतासँ परिपूर्ण छथि, एकर अलावा कोनो विशेष उल्लेखनीय योगदान हिनका लोकनिक नहि छनि। हेम बाबू सेहो तेहने प्रासंगिक पात्र छथि, मुदा निर्मला सन उद्धत यौवना बेटीक पिता छथि, विधुर छथि। आत्म-प्रशंसासँ ग्रस्त छथि, अपन बौद्धिकता पर अपनहि गर्वित रहै छथि, बेटीक उग्र-आधुनिकाक छवि कोनो बेजाए नहि लगै छनि, दोसरक नीको काल अधलाह लगै छनि, सुझाव आ उपदेश देबामे अपनाकें दक्ष बुझै छथि, छिद्रान्वेषी छथि। मैथिल समितिक आयोजनमे पचीस टाका चन्दा द' कए एना मोन बनबै छथि, जेना भुवनजीकें कीनि लेलनि (पृष्ठ-34)।

नरेन्द्र झा मैथिल समितिक सक्रिय कार्यकर्ता छथि, भुवनजीक संग रहै छथि, मुदा परोक्षमे निन्दा करब स्वभाव छनि। निर्मलाक बासा पर जएबामे मोन लगै छनि, मुदा हुनका दुष्चरित्र कहबामे रस लगै छनि (पृ. 39-40)। मैथिल जातिक आम वृत्ति—चुगलखोरी आ दुष्टाचरण पर एहि उपन्यासमे पर्याप्त दृष्टि देल गेल अछि (पृ. 17)। पात्रक वक्तव्य आ आचरणसँ चरित्रक सम्पूर्ण छवि अंकित करबाक महारत राजकमल चौधरीक लेखनमे सगरो देखाइत रहैत अछि।

सुदर्शनजी सन मातृभाषानुरागीक अवतारणा उपन्यासमे थोड़बे काल लेल भेल, मुदा ओतबहि कालमे उपन्यासकार हुनकर विराट छवि ठाढ़ क' देलनि। परम उत्साही, क्रियाशील आ विद्रोही व्यक्तित्वक एहि युवक द्वारा स्कूलमे भाषा सम्बन्धि रीति पर वक्तव्य जारी करब, प्रतिक्रिया देखाएब, एकटा विराट परिदृश्य दिश इशारा करब थिक। स्कूली शिक्षाक भाषा माध्यम आ शिक्षक-शिक्षार्थीक वार्तालापक भाषा माध्यम बड़ पैघ महत्व रखैत अछि। स्कूलमे शिक्षक लोकनि जखन मैथिलीमे गप करनि, तँ हुनका ओ अपन पिता, पितृव्य, भाइ सन लगैत रहनि। मुदा जखनहि आन बोली-बानीक लोक अध्यापक बनि स्कूल अएलनि आ ओ हिन्दीमे गप करए लगलनि, हठात् ओ अदना बुझाए लगलनि, मातृभाषा विरोधी लागए लगलनि (पृ. 54-55)। मातृभाषा लेल बुनियादी क्रान्तिक संकेत एहि अंशमे देल गेल अछि। सुदर्शनजीक हृदयमे क्रान्तिक आगिएना धधकै छनि जे बीचहि सभामे निर्मलाजीसँ बहस क' लेलनि—*नईं निरमल दीदी!...शान्तिक कविता नईं, मात्र क्रान्ति हमरा सभकें चाही, आन्दोलन चाही*(पृ. 53)।... एहि छोट सन उपन्यासमे ततेक बातक

संकेत देल गेल अछि, जे सूइक नोक बराबरि फाँक कतहु नहि देखाइत अछि। वस्तुतः सन् 1947सँ 1967 धरिक समय मिथिला लेल विचित्र सन छल। स्वातन्त्र्योत्तर कालक भारतीय परिदृश्यमे मैथिल, मैथिली आ मिथिला ठकमूड़ी लगा क' बैसल छल। मिथिलाक जे सेनानी, सब किछु छोड़ि संग्रामक सिपाही बनल छल, तकरा पमरियाक तेसर बूझल जाए लागल, ओकर कोनो मानि-मोजर नहि देल जाइ छल। मिथिलाक जे व्यक्ति शासनमे गेल, से नंगरडोलाओन धन भ' गेल। ओकरा लेल मातृभाषा मैथिलीक उपेक्षा कोनो अर्थ उद्देलनक विषय नहि छल। भाषाक महत्वसँ ओ परिचित नहि छल। ओहेन आत्मकेन्द्रित जन प्रतिनिधि मातृभाषा आ जनपदीय संस्कृति लेल कोन संघर्ष करितए?... स्वातन्त्र्योत्तर कालीन तीन दशकक मैथिली रचनाकारकें ई सब किछु भारी बोझ जकाँ निमाहए आ सँवारए पड़लनि। स्थानीय रूढ़ि निपटानक जटिल दायित्वसँ संघर्ष करैत भाषाई जागरूकता उत्पन्न करबामे, आ आन्दोलनक छद्मसँ सर्वसाधारणकें सावधान करबामे...तल्लीन रहब बड़ दुर्वह काज छल। *आन्दोलन* उपन्यास ताहि क्रममे महत्वपूर्ण भूमिका निमाहने अछि।

भुवनजी एहि उपन्यासक अत्यन्त उदार, निविष्ट आ सहज चरित्रक पात्र छथि। उपन्यासक मुखर पक्ष थिक आन्दोलन, तकर नायक इएह छथि। मुदा, जें कि आत्मकथात्मक शैलीमे ई उपन्यास लिखल गेल आ कथावाचक कमलजी भ' गेलाह, भुवनजी गौण पड़ि गेल छथि।

बहुत रोचक ढंगें उपन्यासकार भुवनजीक चरित्र ठाढ़ केने छथि—धीर, गम्भीर, शान्त, उदार।... कलकत्ताक पैघ कम्पनीमे कानूनी सहायक आ व्यापार संचालक छथि। मुदा मातृभाषाक प्रति प्रबल अनुराग छनि। मैथिल समिति आ मैथिली पत्रिका लेल समर्पित व्यक्ति छथि, परोपकारी छथि, मैथिल लोकनि लेल बेस सहायक लोक छथि। ट्राम, बस, फैक्ट्रीमे सय-दू सय मैथिलकें नौकरी दिऔने छथि (पृ. 34)। नीलू सन अनाथ बालिकाकें बेटी जकाँ रखने छथि (पृ. 14)। बेस बुझनुक, चिन्तनशील, युगीन परिस्थितिसँ आ परिस्थितिजन्य क्रिया-कलापसँ नीक जकाँ परिचित छथि। कमलजी जखन कोनो बात पर प्रतिवाद करै छथिन, तँ भुवन जी कहै छथि -- *ई राजनीति थिकै कमलजी, एहिमे उचित-अनुचितक कोनो गप नहि कएल जा सकइए। मिथिला-आन्दोलनक लेल एखन एकटा नेता हमरा सबकें चाही, नामक नेता। जे सभामे गरजि सकए, शासक वर्गक आगाँ धुरझाड़ अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला, फारसी चिकरि सकए। लोककें आतंकित क' सकए, एकटा बिहाड़ि सौँसे देशमे उठा सकए।... असली काज त' हम सब करबइ।... बिहाड़िमे उड़ैत ख'ढ़मे*

चिनगी त' हम सब लगेबड़ (पृ. 15)। मातृभाषा आ जन्मभूमिक प्रति एहि तरहें समर्पित लोक, आन्दोलनकें सफल करबा लेल सफल मार्गक ज्ञाता, नीति-कुशल लोक, भुवनजीक नजरिमे कोनो पैघ काज लेल योजनापूर्वक काज करबाक परिदृश्य एना रचल जाइत अछि। एहेन निविष्ट आ नीतिज्ञ पुरुषक पत्नी महान कुरूपा, नितान्त अव्यवहारिक छथिन। समस्त भव्य छविक अछैत जीवन-परिदृश्यक एक खण्ड बेरंग छनि, मलीन छनि, श्रीहीन छनि। एहेन पत्नी संग कोनो सभा सोसाइटीमे नहि जा सकै छथि। कोनो सभ्य व्यक्तिक चौपालमे नहि बैसि सकै छथि...। भुवनजी सन विशिष्ट आ विराट व्यक्तित्व संग उठबा-बैसबाक लिलसा निर्मला सन सुशिक्षित, सुदर्शन, उद्धत यौवना स्त्रीकें होइ छनि। एहेन उदार देह आ उदार मोनक जवान स्त्रीक प्रति जँ भुवनजी सन परिस्थितिक लोक अनुरक्त होइ छथि, तँ से सहज सम्भाव्य थिक। मुदा अही बीच निर्मलाजीक परिचय कमलजीसँ होइ छनि आ निर्मला आब पुरान गाछक डारिसँ उड़ि कए नव डारि पर बैसए चाहै छथि, कमलजी दिश हुनकर अनुरक्ति बढ़ि जाइ छनि। भुवनजीकें ई बात पसिन नहि छनि, मुदा से व्यक्त नहि करए चाहै छथि। नहि चाहै छथि, मुदा व्यक्त भ' जाइ छनि (पृ. 45)। वार्तालापक ई चमत्कार रोचक अछि।... वस्तुतः प्रेम, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्यक मार्गमे प्रतिद्वन्द्वी ठाढ़ हैब बड़ दुखदायी होइत अछि। एहि दृश्यक विकट-जटिल मनोविज्ञानक ओझराहटिकें जाहि सहजतासँ राजकमल चौधरी टिपने छथि, से रोमांचक अछि।

सकल मैथिल समाजमे चर्चा अछि, जे निर्मलाजी भुवनजीक प्रेयसी छथिन, ताही आकर्षणमे भुवनजी हुनकर बासा पर जाएब आएब करै छथि। मुदा भुवनजी ई व्यक्त नहि होअए देताह, प्रतिष्ठाक प्रश्न अछि। लोकक मुँह बन्द करबा लेल भुवनजी निर्मलासँ दूरी बढ़ा लेताह, से नहि हेतनि। स्त्री देहक उदार छाहरिक प्रश्न अछि। कोनो आन पुरुषक संगति निर्मलाकें भेटनि, से भुवनजीकें पसिन नहि, मुदा कोना रोकथिन, ओ हुनकर पत्नी नहि छथिन, घोषित प्रेमिको नहि। कमलजीक सोझाँ, जे हुनकर बड़ सम्मान करै छथिन, नांगट कोना हेताह?

अइ उपन्यासमे सर्वाधिक जटिल व्यवस्था हिनकहि चरित्र-चित्रणमे अछि। विवाद, तनाव, दाम्पत्य, प्रतिष्ठा, प्रभुत्व, भय, उदारता, वैराट्य... सब किछु मिला कए विचित्र सन स्थिति बनैत अछि। एक दिशा पकड़ि कए जाइत रहू, हुनका नीक आ कि बेजाए साबित करैत रहू, जाइत-जाइत ओहिमे दोसर दृश्य आबि कए पहिलुक सूत्र ओकरा देत। आन पात्रक संग से स्थिति नहि होइत अछि। कने-मने नीलूक चरित्र-चित्रणमे सेहो इएह बात अछि।

कमलजी अइ उपन्यासक नस-नसमे समाएल छथि। कथावाचक हेबाक कारणें आन पात्र लोकनिक चरित्र पर टिप्पणियो करैत गेलाह अछि, मुदा हिनका सम्बन्धमे हिनकर टिप्पणी, उद्घोषणा, वक्तव्य, वार्तालाप आ आचरणे टा विश्लेषण आ मूल्यांकनक आधार बनि सकैत अछि। बेस पढ़ल-लिखल, आधुनिक विचारधारा, स्वच्छन्द चिन्तन पद्धति, प्रचुर प्रतिभा सम्पन्न बेरोजगार मैथिल युवक छथि। साहित्यिक संस्कारक सृजनशील आ सांसारिक युग चक्रक सूक्ष्मतासँ परिचित व्यक्ति छथि। छद्म, पाखण्ड, द्वेष-दुविधासँ परहेज छनि। क्षुधा, यौन-पिपासा आ आत्मसुरक्षाकें मनुष्यक मूल प्रवृत्ति मानै छथि। बुझनुक, वाक्चतुर आ जिम्मेदार लोक छथि। द्यूशन क' कए भाउज, भतीजीक जीवन-यापन, लालन-पालनक चिन्ता रखै छथि। सामाजिक रीति-कुरीति, द्वेष-दुविधा, लोभ-ईर्ष्या, जीह-जौघ-पेटक कामनासँ परिचित छथि। प्रतिभा आ वाक्चातुर्यक बलें महानगरमे अधिकांश लोकक नजरिमे सम्मानपूर्वक बसल छथि। निर्मला सन कामातुरा युवती हुनका पर लहालोट होइ छथि, नीलू सन किशोरी समर्पित हेबा लेल तत्पर छनि, मुदा उचितानुचितक ज्ञानसँ परिपूर्ण कमलजी नीलूक कौमार्य भंग नहि करै छथि। स्त्री-पुरुषक अतिरिक्त निकटता कखनहुँ कोनो परिस्थितिमे परिणत भ' जा सकैत अछि--ताहि अन्देशासँ कमलजी परिचित छथि, तें नीलू आ अपना बीच भाइ-बहिनक लक्ष्मण रेखा घीचि दै छथि।

नारी शोषणक प्रति रोष छनि, स्त्री दमनक प्रति आक्रोश छनि, देह व्यापार क' कए गुजर-बसर करै वाली सुशीला सन स्त्रीक अन्तर्कथा सुनि कए मोन घोर भ' जाइ छनि। कामेच्छा तृप्त करबा लेल अनेक पुरुष कोरमे नांगट होइत अर्थ-सम्पन्न स्त्री निर्मला, आ पारिवारिक भरण-पोषण हेतु असंख्य कामुक राक्षसक उत्तेजना शान्त करैवाली विपन्न स्त्री सुशीलाक तुलनात्मक विश्लेषण करए लगै छथि (पृ. 37-39)।

छोट वयसमे, जखन विवाहक अर्थो नहि बूझै छलाह, स्त्री पुरुष सम्बन्धक ज्ञानो नहि छलनि, तखनहि अपन भाउजक बहिन गुलाबसँ विवाह करबाक इच्छा व्यक्त केलनि (पृ. 28); सम्पूर्ण उपन्यासक जीवनमे भुवनजी सन निविष्ट, प्रतिष्ठित आ गम्भीर लोकक प्रति कोनहु आक्षेप अथवा आधार नहिओ रहैत, निर्मलाजी सन पथभ्रमित स्त्रीक प्रति हुनकर अनुरक्ति (पृ. 45); स्वकीया होइतहु अनेक परिस्थितिवश निर्मलाजी परकीया बनि जएबाक घटना (पृ. 38-40), नीलू पर विष्णुदेव ठाकुरक वासनात्मक दृष्टि (पृ. 16)...अइ तरहक कतोक प्रकरणसँ उपन्यासमे कथावाचक स्पष्ट करै छथि जे भूख, वासना आ सुरक्षाभाव मानव जीवनक अपरिहार्य आवश्यकता

थिक, अइ अपरिहार्यताक अपवाद कमलजी स्वयं सेहो नहि छथि, जकर संकेत अपन वक्तव्य आ आचरणसँ दैत रहलाह। ई परिदृश्य एक दिश उपन्यासक आधार कथ्यकें मजगुत करैत अछि तँ दोसर दिश कमलजीक वैचारिक दुनियाँ आ दृढ़ मान्यताक प्रमाण दैत अछि।

*आन्दोलन*क स्त्री पात्रक कैक कोटि अछि— समय-चक्र आ समाज व्यवस्थाक चाँगुरमे विवश; कामोन्मादमे मातल, मदोन्मत्त; किशोरकालीन उद्वेगमे बहकल, मुदा किछु-किछु सावधान। एहिमे एक वर्गक स्त्री छथि बनगाम वाली आ सुशीला। बनगामवाली जीवन संग्रामसँ लड़बा लेल स्त्री देहक सौदा करै छथि, सौदाक प्रबन्धान, दलाली; दस पाँच स्त्री रखै छथि, अपना घरमे जगह, सुविधा, सुरक्षा दै छथिन, व्यापार चलै छनि, तकर कमीशनसँ हुनकर जीवन-यापन होइ छनि; दुनियाँक आन कोनहुँ परिस्थिति, परिवेश, आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक-नैतिक घटना-कुघटनासँ हुनका कोनहुँ सरोकार नहि छनि। गँहिकी अबैत रहए, पाइ लेल परपुरुष गमन हेतु सहर्ष तैयार स्त्रीक संख्या हुनका ओतए बढ़ैत रहए, एहिसँ पैघ बात, प्रसन्नताक बात हुनका लेल किछु नहि थिक। सुशीला रोजगारक अनुसन्धानमे बौआइत पिताक सन्तान थिकीह, जिनका अपन माइए अइ काज लेल प्रेरित केलकनि आ माइ संगे ओ विभिन्न वेश्यालयमे जाए लगलीह। जीवन-यापन हेतु आओर कोनो आधार बचल नहि छलनि (पृ. 36-39)।

दोसर वर्गक प्रतिनिधित्व करै छथि— निर्मलाजी। जेना कि कहल भेल जे कोनहुँ व्यक्तिक आचारण, ओकर मनोवेगसँ संचालित होइत अछि, आ मनोवेगक मानसिक अवस्थिति व्यक्तिकें प्रदत्त सर्वांगीण वातावरणमे निर्मित आ निर्देशित होइत अछि। निर्मला, हेम बाबूक पुत्री छथि, हेम बाबू कमाऊ लोक छथि, महिनबारी दरमाहा अबै छनि, ओहि दरमाहाक लार-चार, संचय-निस्तार करबाक दायित्व अथवा अधिकार निर्मलाजीकें छनि—कोनो तरहक सामाजिक आँकुश अथवा आर्थिक दबावमे नहि रहै छथि। अन्न-वस्त्र आ सामाजिक सुरक्षाक कोनो समस्या नहि छनि। मुदा दैहिक उत्पाद छनि, जगजियार बनल रहबाक आकांक्षा छनि, सबहक आँखिमे बसल रहबाक लिप्सा छनि। विधुर पिताक दरमाहा, आ परदेशी पति द्वारा पठाओल मनीयाडरक महाबलसँ निर्मलाजी मैथिल समिति द्वारा आयोजित जनसभामे अपनाकें शो-केसक मूर्ति जकाँ सजा क' प्रस्तुत करै छथि। अपन भाषण, भ्रू-विलास, अधरक लाली, कुटिल कटाक्ष, रति-सुरति, अंग-संचालनसँ लोकक मोन मोहैत रहै छथि आ लोकक प्रशंसाक पात्र बनल रहै छथि। हिनका सुशीला जकाँ बनगाम वालीक

खोलीमे खाट नहि ओछब' पडै छनि, नित्य प्रति आ अनेक बेर अनेक कामुक पुरुष संग व्याभिचार नहि करए पडै छनि। काज दुनू एके रंग करै छथि, मुदा, जेँ कि सुशीला लेल देह पूँजी छनि, तेँ हुनकर करतब व्याभिचार कहल गेल आ जेँ कि निर्मला लेल देह प्रसाद छनि, तेँ हुनकर करतब आचार भेल। सुशीला जकाँ जेँ निर्मलोजी बेरोजगार पिताक बेटी रहितथि, दायित्वक बोझ तर दाबल रहितथि, दू साँझक नोन रोटी जुटएबा लेल, दू बीत वस्त्रखण्ड अनबा लेल देहक अलावा आन कोनो बाट नहि रहितनि, तेँ निर्मला जीक चटक-मटक कतए जइतनि?... ओना आजुक स्त्री विमर्शमे छान-पगहा तोड़निहार वक्तव्यवीर लोकनि एहि चरित्रक प्रति, आ तकर एहि तरहक मूल्यांकनक प्रति अनघोल अवश्य करताह, जे स्त्री, देहसँ बाहरो बहुत किछु होइत अछि।...अवश्य होइत अछि, मुदा कोनो मादक संगीत सुनि पोना पर तबला बजाएब, आ तबला पर तबला बजाएब, दुनू दू बात होइत अछि। निर्मलाजी आ सुशीला जीक चारित्रिक विश्लेषणमे एहि उपन्यासमे कामुकताक इएह विरोधी स्वरूप, वासनाक इएह विरोधाभास, नारी समुदायक इएह रूप वैविध्य *आन्दोलन* उपन्यासमे भावककें आन्दोलित करैत अछि।

सुशीलाजी जेँ कि आर्थिक रूपें समृद्ध आ निश्चिन्त छथि, आकर्षक परिधान पहिरबाक क्षमता आ उन्मादक देहक स्वामिनी छथि, आइ भुवनजी, काल्हि कमलजी, परसू केओ आओर... रंग-विरंगक स्वादमे मस्त रहै छथि। सभा-सोसाइटीमे, बुद्धिजीवी लोकनिक बीचमे अपन उपस्थिति बनौने राखए चाहै छथि, प्रतिष्ठित आ विद्वान लोकनिक नयनतारा बनल रहए चाहै छथि, तेँ ज्ञान नहिओ रहैत साहित्य, कला, संस्कृति आ मिथिला-मैथिलीक प्रगतिगामी आन्दोलनसँ जुड़ल रहए चाहै छथि; स्वस्थ आ सम्पूर्ण पुरुषक सान्निध्य हुनका लेल बड़ पैघ बात थिक। मदिरतम मुस्कान, भू-भंगिमा, रति-सुरतिक प्रभावें विद्वत जनक आँखिमे बसल रहब हुनकर नेत छनि (पृ. 39-40)। सुशीलाक राति आ निर्मलाक रातिमे इएह अन्तर अछि आ इएह समानता।...वस्तुतः सुशीला आ निर्मला, दुनू दू वर्ग स्त्री छथि। एक गोटे प्राण रक्षा लेल, नोन-रोटी लेल, अपन आ परिवारक क्षुधा मेटएबा लेल, स्वयं निष्काम बनि दोसरक कामोत्तेजना शान्त करबाक साधन बनै छथि; दोसरक यौन-पिपासाक शमन करै छथि; तेँ दोसर यौन-पिपासासँ व्याकुल भेल दोसराकें पीबि जएबा लेल उताहुल रहै छथि; नित नव-नव माछ पर जाल फेकै छथि।--*निर्मला जी छथि सभा-सोसाइटीक प्रेमिका। पुरुष-समाजमे गोला बिना नीक नहि लगै छनि। मैथिल समितिक द्वारा ई भुवनजीक सम्पर्कमे अएलीह, आ भुवनजीक द्वारा मैथिल समितिक*

सम्पर्कमे। आ भुवनजी हिनका अपनामे लपेट लेलथिन। निर्मलाजीकें ई गप्प अष्ट
लाह नहि लगलनि। आब त' सौंसे समाजकें बूझल छै जो ओ भुवन जीक प्रेयसी
छथि। हेम बाबूकें सेहो बूझल छनि। हेम बाबूक जमायकें सेहो खबरि छनि। ओ
बेचारा तँ लाजें कलकत्ता अबितो नहिऐँ...(आन्दोलन/पृ. 39)।

विचारणीय विषय इहो थिक जे अर्थाभावे या मानव जीवनक मूल समस्या
नहि होइत अछि। यौन-तृप्ति लेल विवाहेटासँ निश्चिन्त नहि भेल जा सकैत अछि।
निर्मलाजी तकरहि उदाहरण थिकीह, हुनका सन बिआहलि स्त्री; विधुर पिता आ
परदेशी पतिक संयुक्त कमाइ पर एकछत्र अधिकार रखनिहारि स्त्रीक ई आचरण कथी
लेल?

नीलूक चरित्र अपेक्षाकृत बेसी व्याख्येय आ विश्लेषणपरक अछि। ओ
अनाथ छथि, मुदा भुवनजी सन निविष्ट व्यक्तिक छत्रछायामे लालन-पालन भेलनि।
जन्महिसँ महानगरमे छथि, मुदा महानगरीय अपसंस्कृतिक असरि हुनकर आचरण
पर नहि छनि। मैथिल संस्कार आ सभ्यतासँ परिपूर्ण छथि। वाक्चातुर्य, साहस,
शालीनता, प्रगतिकामना, रूढ़ि द्रोहसँ सम्पन्न तेरह-चौदह बखक किशोरी छथि।
अतिथि सत्कारमे पटु, काँचहि उम्रमे लोक-समाज आ देश-दुनियाँकें चिन्हबाक
क्षमतासँ परिपूर्ण, कोनहुँ परिस्थितिमे कोनहुँ व्यक्तिक समक्ष अपन बात निडरतासँ
रखबाक स्पष्टता छनि। विष्णुदेव ठाकुरकें ठाँय-पठाँय लोफर कहि देलनि (पृ. 16)।

नीलू भावुक छथि, कमलजीकें कमल भैया एहि लेल नहि कहती जे हुनकर
एकटा कमल भैया टी.बी. रोगसँ मरि गेलनि (पृ. 22-33)। कमलजीक जेबी आ
मनीबेग टेबैत रहै छथि, छोट हेबाक अधिकार मँगै छथि (पृ. 32)। घरमे एकाकी
जीवन व्यतीत करैत अकच्छ छथि आ कमलजीकें कहै छथि जे अहाँकें तँ हमरा दिश
तकबाक पलखति नहि होइए (पृ. 47-48)। निर्मलासँ कमलजीक हेम-क्षेम नीलूकें
नीक नइँ लगै छनि (पृ. 48)। कमलजीसँ नीलूक हेम-क्षेम भुवनजीकें सन्देहास्पद
लगै छनि (पृ. 49)। कमलजी नीलूक करतब पर संशकित रहै छथि (पृ. 48)।
नीलूकें होइत रहै छनि जे ओ दिन राति कमलजी लग बैसल रहथि। राति कए
अर्द्धनग्न अवस्थामे कमलजीक ओछाओन धरि पहुँच जाइ छथि (पृ. 50-51)।
सम्पूर्ण कथामे नीलूक करतबकें एकटा 'पाठ' बूझि जँ एहि पर विचार-विमर्श हो, तँ
सब किछु झलफल बुझाइत अछि। कमलजी आ भुवनजीक शंका, नीलूक ईर्ष्या,
बहिन-भाइक सम्बोधन, यौन-पिपासाक दैहिक आवश्यकता अथवा मनोवेग-उद्वेग
अथवा काम-युद्ध लेल उन्मादित योद्धा, आन्तर राक्षस...सब किछु गड्ड मड्ड भ'

जाइत अछि। कखनहुँ त' मानवीय मनोवेगक सहजात चरित्र लगैत अछि कखनहुँ घनघोर रहस्यमय। सर्वगुण सम्पन्न किशोरी नीलूक यौनोन्माद हुनका समस्त नैतिकता, मर्यादा, वर्जना आ सम्बन्ध-सम्बोधनक सीमासँ मुक्त क' दै छनि। मनौन लेल धिधियाइत कमलजीक समस्त प्रस्तावकें नकारैत साफे-साफ कहै छथि जे लोक किछु कहए, हमरा नइ रहल जाइए, अहाँ हमरासँ विवाह क' लिअ' (पृ. 51)। मनोवेग आ कामोत्तेजनाक खौतकें एहि उपन्यासमे मानवीय प्रवृत्तिक रूपमे जतेक स्पष्टता आ वैविध्यसँ व्याख्यातित कएल गेल अछि, ताहिसँ प्रमाणित होइत अछि जे सत्ते यौनोन्मादमे गाय धरि बाधिन भ' जाइत अछि। स्थापित मर्यादाक अधीन तृप्तिक बाट साफ भेल तँ भेल, नहि भेल तँ उद्वेग लेल कोनहुँ सीमा, कोनहुँ मर्यादाक अनुपालन काम्य नहि थिक। समस्त नायक-नायिका एवं सहयोगी पात्रक जीवन-प्रक्रिया, रहन-सहन आदिक वर्णन एतए अत्यन्त स्वाभाविक ढंगें भेल अछि।

एकटा गौण स्त्री पात्र छथि कमलजीक भौजी। कमलजी अपन प्रवासक श्रेय हिनके दै छथि। भौजी कहलकनि--*गामक जीवन अहाँकें सहल नहि जाएत। सहलो जाएत तँ... गामक लोक निन्दा करत। कहत, घरमे विधवा भौजी छथिन, तें ई नौकरी छोड़ि गाममे बैसल अछि...*(पृ. 13)। अइ वक्तव्यमे सेहो मानवीय वृत्तिक सहज आशंका अछि--समाजक मोनमे संशय हेबाक आशंका, अपने मोनक सम्भावना पर आशंका, कमलजीक धारणा पर आशंका...। आगि आ ख'ढ़ एक ठाँ रहत, जानि नहि कहिआ की भ' जाएत! 'भौजी' मैथिल समाजक अथवा मैथिल नारीक विचित्र उदाहरण थिकीह। जीवनक भार, सन्तानक भार, मर्यादाक भार, देहक भार, समाजवृन्दक मोनमे उठैत कल्पनाक भार... मिथिलाक कोनो विधवा स्त्रीक जीवन कोन तरहें, तरुआरिक धार पर चलबा लेल विवश रहैत अछि, तकरा उपन्यासकार मात्र एक वक्तव्यमे स्पष्ट क' देने छथि।

सम्पूर्ण सृष्टिमे दू टा अभिकरण महत्वपूर्ण अछि -- एकटा समाज व्यवस्था, जाहिमे राजनीति, समाजनीति, अर्थनीति, मूल्यनीति आदिक मर्यादा, कानून-कायदा आ सीमा शर्त अबैत अछि; आ जकर प्रतिनिधित्व अइ उपन्यासमे मैथिल समिति द्वारा चलाओल आन्दोलन थिक। एहि आन्दोलनमे सब किओ अपन-अपन पैरुख-प्रतिभाक अनुकूल अपन-अपन महत्व साबित करए चाहै छथि, स'क भरि जे क' पवै छथि, करै छथि, तृप्त अथवा कुण्ठित होइ छथि; निन्दा-शिकायत, च'र-चुगलखोरी, ईर्ष्या-द्वेषमे

लिप्त रहै छथि। अपन हैसियत लेल हरदम अत्यानुमान आ अदना लेल न्यूनानुमानक धारणासँ ग्रस्त रहै छथि। मैथिल समितिक क्रिया-कलापकें जँ प्रतीक अर्थमे ली तँ सम्पूर्ण भारतीय समाज व्यवस्थाक गुण-सूत्र एहिमे भेटि सकैत अछि। दोसर अभिकरण थिक मानवीय मनोवेगक सन्धान व्यवस्था। सत्य तँ ई थिक जे एकर कोनो व्यवस्था नहि होइत अछि, कोनो स्थापित आ शाश्वत व्यवस्थासँ ई संचालित नहि होइत अछि। व्यक्ति-व्यक्तिक क्षण विशेषक मनोवेग अलग-अलग व्यवस्था विधान निर्मित करैत अछि। रोटी, सेक्स, सुरक्षाक आवश्यकता पूर कर' लेल कखन कोन व्यक्ति की करत, तकर पूर्वानुमान असम्भव अछि। कैक कोटिक स्त्री पुरुषक मनोवेगक विश्लेषण आ चित्रणसँ एहि उपन्यासकें जाहि तरहें समृद्ध कएल गेल अछि; से विवेकशील रचना पाठ प्रक्रियाक माँग करैत अछि। ताहि आधार पर ई कहबामे कोनो संकोच नहि हेबाक चाही जे भारतीय नागरिकक जीवन-व्यवस्थाकें गम्भीरतासँ रेखांकित करबा लेल ई छोट सन वृत्तान्तक कथा, भारतीय साहित्यक अपूर्व निधि थिक, निदर्शिका थिक।

तुलनात्मक रूपें देखी तँ *आदिकथा*क देवकान्त आ *आन्दोलन*क कमलजीमे विराट अन्तर अछि। देवकान्त मर्यादा आ मनोवेगमे सामंजस्य स्थापित नहि क' पवै छथि। दुनू स्थितिक संघर्षक ज्वालामे स्वयंकें भस्म करैत रहै छथि। मुदा कमलजी बेसी सहज छथि। नैतिकता आ मर्यादाक रक्षा करबामे कतहु कोनो हूसल डेग नहि उठबै छथि; काम-तृप्ति हेतु समर्पित नीलूकें अपना कोठलीसँ आपस तँ क' दै छथि, मुदा मनोवेगकें मारि कए अपनाकें प्रतारित नहि करै छथि। चल जाइ छथि राति बेच'बाली सुशीला नामधारी स्त्रीक खाट पर। ई दीगर बात थिक जे ओतएसँ दोसर मनोवेग बेसाहि अनै छथि।... दुनू नायकक दू परिदृश्य, दू जीवन, दू बाट, दू सीमा अछि। *आन्दोलन*, जीवन-संग्राममे तल्लीन मैथिल नागरिकक चारित्रिक विश्लेषण, सामाजिक-राजनीतिक पर्यवस्थितिक कोलाज थिक, वृत्तान्त थिक; तँ *आदिकथा* सामन्ती संस्कारक कोखिमे पुष्पित-विकसित विकृति आ मानवेतर भाषा, व्यवहार, व्यवस्थादिक कुत्सित स्वरूपक गाथा। *आन्दोलन*क नीलूक उन्माद वयसोचित आचरण थिक, अजोह वयसक एकटा कन्याक क्षणिक उद्वेग थिक; ओहिमे ने तँ दुतरफा प्रेमादर्शक कोनो रूपाकृति अछि, ने वासनात्मक भूखक कोनो नियोजित अवधारणा। ओहिमे कोनो स्वस्थ, सुविचारित सोच आ दूरगामी चिन्तनशीलताक कोनो आशा

नहि कएल जा सकै अछि; सम्भवतः तें ओकरा बुझ-सुझा क' बाट धराएब आसान छल। मुदा आदिकथाक सुशीला परिपक्व, प्रौढ़ आ प्रगल्भ स्त्री छथि। कुलीन घरानाक एहि विवाहित आ अतृप्तकामा नायिकासँ हिनकर स्वस्थ मानसिकता, तीव्र मनोवेग आ ठोस निर्णयक उमेद कएल जा सकैत अछि। हिनकर प्रेम निवेदनकें नकारल जा सकै अछि, तिरस्कृत कएल जा सकै अछि, हिनका बुझाओल नहि जा सकै अछि। नीलूक उन्माद भेल लुत्ती, जकरा सुनगैसँ पूर्वहि मिझाओल गेल; मुदा सुशीलाक उन्माद भेल दावानल, ओकर मिझाएब असम्भव अछि, ओकर तृप्ति आवश्यक अछि, ओहिसँ धाह उठब उचित अछि। दोसर बात ई जे नीलूक उद्वेग एसगर उठल दोसर मिझौलक; मुदा सुशीलाक उद्वेग जखनहि उठल, देवकान्तक उद्वेगसँ घी-बसात पबैत गेल। दावानल बनि गेल...। दुनू उपन्यासक दू परिदृश्य अछि, दू पर्यवस्थिति अछि...। तथापि लेखकक जीवन-दृष्टिक अन्तर्धारा सब ठाँ व्याप्त अछि। दू उपन्यासक दू परिदृश्य आ दू पर्यवस्थितिक नायक छथि—कमलजी आ देवकान्त। मुदा सब किलु भिन्न रहलाक बादहु नायकक स्वभावमे एतबा साम्य छनि जे कमलजीक नजरिमे चाह-कॉफीमे दूध, चीनी मिलाएब ओकर कौमार्य नष्ट करब थिक (आन्दोलन/पृ. 43) दोसर दिश बिना दूध-चीनीक चाह पीब देवकान्तक प्रवृत्ति भ' गेल छनि (आदिकथा/पृ. 37)। सामान्य अर्थमे त' ई अत्यन्त सरलीकृत आ चलताउ वाक्य लगैत अछि, मुदा गम्भीरतापूर्वक विचार कएला पर, प्रतीक अर्थमे वस्तु आ विचारक मौलिकता बनौने रखबाक, ओकर दोषादोष संग ओकरा ग्रहण करबाक ईमानदारी थिक।

विद्वान लोकनि तँ मानिते छथि, पाठकीय दृष्टिकोणसँ सेहो ई प्रमाणित भ' चुकल अछि, जे कथोकथन आ वार्तालापसँ कोनहुँ कथाकृतिमे नाटकीयता आ जीवन्तता अबैत अछि। उपन्यासक स्थितिमे तँ ई सर्वाधिक प्रभावी होइत अछि। कथा विस्तार आ घटना विकासमे कथोकथन जते बेसी हो, उपन्यास ओतबे जीवन्त हएत। एतबा धरि अवश्य जे कथोपकथनक सम्वाद, भाषण नहि भ' जाए, से भेलासँ उपन्यासक रोचकता आ प्रभाव आहत होइत अछि। हमरा जनैत ओ उपन्यास सर्वाधिक रोचक आ प्रभावकारी होइत अछि, जकर पात्र आपसमे बेसी काल गप-शप करैत कथाकें गति दैत अछि। उपन्यासकारकें कथाभूमिमे जते कम जाए पड़नि, प्रभाव तते बेसी प्रबल हएत। मुदा ई गप-शप लब्धर नहि हो, से ध्यान राख'क थिक। सम्वादमे पात्रक मनोभाव आ आचरणक संकेत हो। अर्थात् नाटकीय शैलीक उपन्यास

लिखब एकटा पैघ जोखिमक काज थिक, जे उपन्यासकें संक्षिप्त, दीप्त, रोचक आ प्रभावकारी बनबैत अछि। ओना एकटा विकराल जोखिम संग लागल रहैत अछि -- कौशलमे कनेको चूक भेल तँ सब गुर गोबर।

एहि मामिलामे राजकमल चौधरीक दुनू उपन्यास--*आन्दोलन*, *आदिकथा*-- प्रभूत सफल उपन्यास थिक। दू भिन्न विषय, दू भिन्न मनोभावक उपन्यासमे कथानककें विस्तार दैत कथोपकथन, घटना विशेषक परिस्थिति आ वातावरण निर्माणमे अपूर्व सफलता प्राप्त केलक अछि। पात्रक आवेग, प्रेरणा, भावना, घटना विशेष पर ओकर प्रतिक्रिया आ पारस्परिक प्रभावक झँकी दुनू उपन्यासक कथोपकथनमे हरदम देखाइत रहैत अछि। छोट-छोट वाक्य आ कथन खण्डक कारणें ई प्रभाव आओर रोचक भेल अछि आ उपन्यासमे निखार आएल अछि। *आन्दोलन*मे सुशीला सन वेश्यासँ कमलजीक वार्तालाप(पृ. 38-39), निर्मलाजीसँ भेंट-घाँटक मादे कमलजी आ नीलूक वार्तालाप(पृ. 48), भाषणक रूपमे देल गेल वक्तव्यक अछैत सुदर्शनजीक स्थिति-चित्र विवरण(पृ. 51-53), अइ बातक प्रमाण थिक जे छोट-छोट वार्तालापसँ कोना एकटा वेश्याक दारुण कथा, अथवा कोनो पुरुष दिश अनुरक्त एकटा युवतीक दोसर स्त्रीसँ ईर्ष्याभाव, अथवा कोनो अनैतिक-अवांछित घटनासँ कोनो युवकक आक्रोशक उद्देग स्पष्ट होइत अछि; आ कोन वैशिष्ट्यक संग तकर प्रभाव पड़ैत अछि।

आदिकथा यद्यपि वर्णनात्मक शैलीमे लिखल गेल उपन्यास थिक तथापि वार्तालाप द्वारा पात्रक मनोभाव आ चारित्रिक वैशिष्ट्य एतए अंकित अछि। राजकमल चौधरीक कथालेखनक ई खास विशिष्टता थिक, जकर समावेश अइ उपन्यासमे नीक जकाँ भेल अछि। वार्तालापक पश्चात एहि उपन्यासमे कतोक ठाम उपन्यासकार पात्रक क्रिया, आवेग, मनोदशा आदि पर अपन टिप्पणी दैत आगू बढ़ै छथि; मुदा से टिप्पणी अपन गसावक कारणें वार्तालापक संयोजक बिन्दु साबित होइत अछि। प्रथम भेंटक प्रारम्भिक सम्वादमे सुशीला, देवकान्तसँ पूछब शुरू करै छथि जे--*अहाँ जमीन्दार छी?... आ अन्त करै छथि जे -- अप्पन घर त' अहाँ हमरा सबकें द' देलजँ, अपने कतए सूतब?... (पृ.34-35)*। अइ वार्तालापमे दुनूक अनुरक्तिक सूक्ष्म विश्लेषण होइत नजरि अबैत अछि। कोनो स्त्री-पुरुष एक दोसरा दिश कोना अनुरक्त होइ छथि, अनुरक्तिक उद्भव कोना होइत अछि, संकेत कोना होइत अछि, दू अपरिचित व्यक्तिक अपरिचित संकेतक जाँच परताल कोना होइत अछि, दुनू आपसमे कोना खुजैत जाइत अछि... *आदिकथा*क कथोपकथन एहि समस्त मनोभाव

आ परिस्थितिक वार्तालापक विशिष्ट उदाहरण थिक। विश्लेषणात्मक शैलीमे लिखल गेल उपन्यासमे, पात्रक मनोविश्लेषणकें रेखांकित करैबला कथोपकथन, अक्सर उपन्यासक प्रभावकें उत्कर्ष दैत अछि आ उपन्यासकारक विश्लेषणात्मकताकें गति आ आलन दैत अछि, से एतए भेल अछि। जखन देवकान्तक माम अनिरुद्ध बाबू देवकान्तकें मातृकमे किछु दिन आओर रहि जेबाक आग्रह करै छथि, तखन सुशीला आ देवकान्तक प्रेमाभिव्यक्ति स्पष्ट शब्दमे होइत रहैत अछि, प्रेमिकाक पतिकें सेहो अर्थ स्पष्ट लगैत रहै छनि, मुदा प्रेमक नहि, मामि-भागिनक मर्यादापूर्ण स्नेहक (पृ. 67-68)। बहुअर्थक कथोपकथनक ई कौशल चमत्कृत करैत अछि। दैनन्दिनक बोली-बानी, भाषा-संस्कारकें तरासि कए रोचक कथोपकथन बनाएब पैघ कौशलक बात थिक। राजकमल चौधरीकें भाषा संरचनामे एहि तरहक चमत्कार उत्पन्न करबाक महारत प्राप्त छनि।

कोनहुँ उपन्यासक कथाक्रम, पात्रक आचरण आ करतब, क्रिया-कलापक परिणति तथा सामाजिक प्रतिक्रिया आदिक प्रभाव भावक पर तखनहि फलित होइत अछि, जखन ओकर विश्वसनीयता कायम भ' सकए। विश्वसनीयता स्थापित नहि भेला पर कतोक बेर सत्यकथा, फूसि लगैत रहैत अछि, आ तखन पाठक ओकरा खिस्सा-पिहानी बूझि बहटारि दैत अछि। एहना स्थितिमे साहित्य-सृजनक मूल लक्ष्य –सामाजिक परिदृश्य संशोधन अथवा मानवीय व्यवस्थाक संस्थापनक पूर्ति नहि भ' पबैत अछि, ओहेन साहित्य मात्र मनोरंजन बनि कए रहि जाइत अछि। मनोरंजन कथा साहित्य लेल आवश्यक अवश्य अछि, मुदा ओ साधन थिक, साध्य नहि। कोनहुँ कथा साहित्य लेल मनोरंजन एतबे अर्थ रखैत अछि, जे पाठक ओकरा आश्रयमे रचनासँ आद्योपान्त जुड़ल रहए। कथा साहित्यक असल उद्देश्य समाप्तिक पश्चात शुरुह होइत अछि, जखन ओकर प्रभाव भावक मोनमे चलैत रहैत अछि। ..एहि स्थिति लेल कथाक्रमक विश्वसनीयता प्रमुख तत्व थिक। अविश्वसनीय कथासूत्र कोनहुँ पाठकक चेतनाकें झकझोड़ि नहि सकैत अछि। तें हरेक घटनाक्रम लेल, चरित्र चित्रण लेल, देश-काल-वातावरणक व्यवस्थित स्वरूपक निरूपण आवश्यक अछि। कोनहुँ पात्रक आचरण, करतब, मनोवेग, क्रिया-कलाप, कथोपकथन आदिक स्वाभाविकता सुनिश्चित करबा लेल वातावरण, देश, काल आदिक औचित्यक सूचना आवश्यक होइत अछि। निर्मलाजीक कामोन्माद, अनेक पुरुष संग घुमबा-फिरबाक प्रवृत्ति कलकत्ताक परिवेशमे मात्र चर्चाक विषय थिक, मिथिलाक कोनो गाममे ई घटना होइत, तँ आगि लागि जइतए। मुदा इंग्लैण्ड-अमेरिकामे एहेन

किछु नहि होइतए। ठीक तहिना, नीलूक विवाह लेल हुनकर आश्रयदाता ब'र तकै छथि, कमलजी संगे हेम-क्षेम देखि चिन्तित होइ छथि; मुदा पाश्चात्य देशमे ई बात अप्रासंगिक होइतए। एम.ए. पास युवक कमलजी मिथिलाक कोनो गाम, कोनो टोलमे ट्यूशनकें अपन जीविका नहि बना सकितथि। कतबो पढ़ल-लिखल होथु, कोनो युवती ग्रामीण परिवेशमे सभा-सोसाइटीमे उठब-बैसब नहि क' सकितए। पाश्चात्य संस्कृतिमे अनिरुद्ध बाबू कतबो उच्च कुलशीलक होइतथि, कतबो सम्पत्तिशाली होइतथि, सुशीला सन उद्दाम जवानीक स्त्री बियाहि क' घर नहि अनितथि; कदाचित अबियो जैतनि तँ ओ कुलानन्द सन समवस्की युवकक मातृत्व नहि स्वीकारितथि, अपन यौन तुष्टि लेल कखनहुँ कोनो देवकान्त, अथवा कुलानन्दक बाँहि ध' लितथि। कुलानन्दक स्त्री हुनकर अत्याचार नहि सहितनि; हरिनगरबालीक चौताली नहि चलितनि...।

वातावरण निर्माण लेल सेहो आलोच्य समाजक सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, वेश-भूषा, सामाजिक परिवेश भौगोलिक आबोहवा, प्राकृतिक परिस्थिति...सब किछु उत्तरदायी होइत अछि। कोन परिवेश, कोन वातावरणसँ प्रभावित भ' कए कोन कालमे *आदिकथा*क सोना मामी देवकान्त पर अनुरक्त होइ छथि, रुष्ट होइ छथि; कोन रीति रिवाजक कारणें कुलानन्द संगे रहबा लेल विवश होइ छथि, कोन कारणें हुनकासँ घृणा होइ छनि, कखन आ किए हफीम खा लै छथि, हरिनगरवाली पर किए तामस उठै छनि; *आन्दोलन*क नीलू कोन संस्कार आ सांस्कृतिक अनदानक कारणें कोन समयमे कमलजीक स्वागत करै छथि, आदर करै छथि, प्रेम करए लगै छथि, सर्वस्व अर्पित करए चल जाइ छथि; कोन समयमे निर्मलाक शांतिगीतक प्रस्ताव अनर्गल साबित होइत अछि; कोन परिस्थितिमे *आन्दोलन*क सुशीला बनगाम बालीक शरणमे जाइ छथि; निर्मला भुवनजीक संग छोड़ि कमलजी दिश लपकै छथि... एहि समस्त प्रश्नक उत्तर देश-काल-वातावरणसँ देल जाइत अछि। कोनो घटना खास भौगोलिक परिवेशक खास परिस्थिति आ खास समयमे घटित भ' कए अर्थवान अथवा अर्थहीन होइत अछि। कोनहुँ पात्रक मनोदशा अथवा क्रिया-कलाप स्थान-काल-पात्र आ वातावरणक अनुसार स्थिर आ परिवर्तनशील होइत अछि। उपन्यासक कथाक्रममे एकर बड़ महत्व होइत अछि। से राजकमल चौधरीक एहि दुनू उपन्यासमे सहजतासँ रूपायित अछि।

चित्रकलासँ राजकमल चौधरीकें बड़ बेसी अनुराग रहलनि अछि। कतोक बेर मित्र लोकनिकें पत्र लिखैत अपन किछु धारणा चित्रमे अभिव्यक्त केलनि अछि,

किछु कविता, चित्रक संग लिखने छथि। इएह कारण थिक जे हुनकर कथा, कविता, उपन्यासमे कतोक ठाम पढ़बासँ बेसी कोनो मनोरम अथवा मार्मिक अथवा हृदय विदारक पेंटिंग देखबाक अनुभव होइत रहैत अछि, अर्थबहुल आ संकेतबहुल पेंटिंग देखबाक अनुभव -- शरदक पवित्र आकाशमे श्वेत तनु चन्द्रमा उगल छल। कती राति बीतल होएत, किछु ज्ञात नहि। हमर मोन अपन गाम दिश भागि चलल। चरखा काटि कए गुजर करैबाली माइ, बदरिकाश्रम-कैदारनाथ-अमरनाथ जएबाक मनोरथ जकर पूर नई भ' सकलइ... आ हम दू बेर सुमेरु पर्वत आ तिब्बतक अन्तिम सिमान धरि भ' आएल छी। हमर अग्रज गामक हाई स्कूलमे गणितक अध्यापक छलाह... अपन पेट काटि कए हमरा एम.ए. पास करौलनि... गाममे महामारीक उत्पात भेल, टन्नसँ रहि गेलाह। आब विधवा भौजी छथि, सोन-सन हुनकर कन्या छनि आ चारू कात भूख, दरिद्रता, संक्रामक बीमारी सभक जाल पसरल अछि... भौजी हमरा संगें नई रहै छथि, समाजक भयसँ... आ हम बिआह नई करै छी... (आन्दोलन/पृ. 21)।

एहि छोट सन स्थिति-चित्रमे उपन्यासकार कैक बर्खक समय, कैक मनोभाव आ स्वप्नखण्डक वितान, कैक मनोवृत्ति आ व्यवस्था-मर्यादा-दायित्वक बन्धन आ कैक विवशताक दारुण विडम्बनाकें जीवन्त क' देने छथि। एतेक छोट चित्रमे विराट परिदृश्यक समावेश कोनो कलाकारक श्रेष्ठ कौशल आ गम्भीर जीवन-दृष्टिक परिचायक थिक। अहिना आदिकथा उपन्यासमे--अहाँ देवबाबूक संगें सुलतानगंजक जल-मन्दिर देख आउ। हम नई जा सकब। कैकटा मोकदमाक कागज-पत्र तैयार करबाक अछि...।...सुलतानगंजमे गंगाक बीच धारामे अछि प्रसिद्ध अजगैबीनाथ महादेवक प्राचीनतम मन्दिर।...भागिन आ मामी नाह किराया क' कए मन्दिर पर अएलाह। भोरक आठ-नौ बजल हएत। सूर्यक किरण जाहवीक जल पर सतरंग चित्र बना रहल छल।...अकारण खिलखिलाइत, सुशीला पुछलथिन--महादेवसँ की वरदान माँगबैन?...की कहबैन? लाज किऐ होइ'ए?...तावत तीन-चारि टा पण्डा हिनका सबकें धनीक कुलशीलक दम्पति बूझि कए संग भ' गेलनि...(आदिकथा पृ. 44-46) ...स्थिति चित्रक एहि तरहक उत्कर्ष चमत्कृत करैत अछि। शब्द, कथन, आ वाक्यांशक अर्थ कैक परतमे कैक तरहक व्यंजना दैत रहैत अछि। सन्तुलित आ संयमित कौशलसँ देश-काल-वातावरणक चित्रांकन सर्वथा, सर्वदा कोनो रचनाकें विराट आ शाश्वत साबित करैत रहल अछि, से राजकमल चौधरीक हरेक रचनामे भेटैत अछि।

वस्तुतः राजकमल चौधरी बहुविधावादी रचनाकार छथि। अंग्रेजी आ बांग्लामे त' सब विधामे रचना नहि केलनि मुदा मैथिली आ हिन्दीमे ओ सब विधामे रचना केलनि। विवेचक लोकनिमे बड़ बेसी विवाद अछि, किओ हुनका सफलतम कवि, किओ कथाकार, किओ उपन्यासकार, किओ निबन्धकार मानै छथि। हमरा जनैत, राजकमल चौधरीकेँ मूलतः कवि माननिहार लोकक धारणा ई रहैत हेतनि, जे हुनकर भाषा-शिल्प मूलतः कविताक शिल्प थिकनि। सम्पूर्ण गद्य, एते धरि जे डायरी आ पत्र धरिमे कविताक लय भरल रहैत अछि। ई बात उल्लिखित समस्त उदाहरणहुँसँ प्रमाणित कएल जा सकैत अछि। छोट सन वाक्य खण्ड लिखि कए विराट व्यंजना दिश संकेत क' दै छथि, आ तखनहिँ पाठक/भावक दोहरी विचार-व्यवस्था संग वेगमयी जलधारामे बहैत चल जाइत अछि। जखनहि पाठक--भौजी (विधवा) हमरासंगें नहि रहै छथि, समाजक भयसँ...अथवा...महादेवसँ की...कहबैन?लाज किए होइए...? ... सन उद्धरण देखै छथि, एक टा कथा ओ पढ़ैत रहै छथि, आ एक टा कथा हुनका भीतर सेहो जनमैत जाइत अछि। दू कथाधाराक विकास एक संग होइत जाइत अछि, कखनहुँ समानान्तर, कखनहुँ ओझराइत, कखनहुँ स्पष्ट होइ...राजकमल चौधरीक गद्यक ई विशेष छटा थिक। मानव जीवनक पारस्परिक सम्बन्धक विचार, भावना, आवेग, प्रेरणा आदिकें अभिव्यक्ति दै वला महत्वपूर्ण विधा, आ महत्वपूर्ण रचनामे तकर उपयोग करैत गेल छथि।

मैथिली समस्याक टोह लैत कथा-संकलन : उदाहरण

पछिला चारि बर्खमे कोनो पैघ आ महत्वपूर्ण प्रकाशनसँ मैथिलीक तीन गोट कथा-संकलनक प्रकाशन मैथिली भाषा लेल एकटा शुभ-संकेत मानल जा सकै छ। नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा सम्पादित *मैथिली कथा संचयन*(सन् 2005) आ सन् 2007मे तारानन्द वियोगी द्वारा सम्पादित *देसिल बयना*(सन् 2007) पाठकक बीच लोकप्रिय भ'ए रहल छल कि प्रकाशन विभागसँ देवशंकर नवीन द्वारा सम्पादित टटका मैथिली कथा-संग्रह *उदाहरण छपि क'* आबि गेल। प्रसन्नताक बात थिक जे *उदाहरण*क प्रकाशनसँ प्रकाशन विभागमे साहित्यिक रचनाक प्रकाशनक बाट फूजल, जे स्वागत योग्य अछि।

*उदाहरण*मे ललितसँ सियाराम सरस धरिकक कुल छत्तीस गोट कथा संकलित अछि। एहि संकलनसँ मैथिली कथा-संसारक परिदृश्य स्पष्ट होइत अछि। संकलनक कतोक कथा समस्त भारतीय भाषासँ कान्ही मिलान लेल तत्पर अछि, जे संकलनकर्ताक चयनकौशलक सूचक थिक। श्रेष्ठ कथाकार राजकमल चौधरीक कथा 'एकटा चम्पाकली एकटा विषधर' घाघ मैथिल समाजक टोप-टहंकारकें अद्भुत रूपें अनावृत्त करैत अछि। सवर्ण मैथिलक गरीबी, ओहि गरीबीसँ उत्पन्न दयनीयता, आ तकर खोलमे दुबकल बेटीक शातिर माइ-बापक धिनौन आचरण घनघोर तनावक संग पाठककें झकझोरैत अछि। दशरथ झा आ हुनकर घरबाली अपन तेरह बर्खक बेटी चम्पाक विवाह बासैठ बर्खक वृद्ध शशि बाबू संग करेबाक षड्यंत्रपूर्ण योजना बनबैत अछि। दुनू प्राणीक गिद्ध दृष्टि शशि बाबूक सम्पत्ति पर टिकल छनि, जकर मलिकाइन विवाहोपरान्त हुनक तेरह वर्षीया चम्पा बनैबाली छनि। अतिशयोक्ति सन लगैबला एहि घटनाक मर्मकें ओएह बूझि सकत जे मिथिलांचलक बहुविवाह प्रथासँ नीक जकाँ परिचित छथि। बीसम-एकैसम विवाहक बाद पति अपन पूर्व पत्नी सभक मुँहो बिसरि जाइ छलाह।

पत्रकारिता दुनियाक महत्वपूर्ण आ सम्वेदनशील पक्षसँ मायानन्द मिश्रक

कथा ‘भए प्रकट कृपाला’ साक्षात्कार करबैत अछि। मीडिया-तन्त्र पर बनल सार्थक हिन्दी सिनेमा ‘पेज थ्री’ जे किओ देखने छथि, से एहि कथाक मर्मकें बेसी नीक जकाँ बुझि सकै छथि। शीघ्रतासँ नामी पत्रकार बनि जाएबाक हड़बड़ीकें कथामे कलात्मक ढंगसँ एकरल गेल अछि। कॉरपोरेट दुनियाँक बादशाह श्याम बोगलाक मृत्युक खबरि सबसँ पहिने देबाक होइ लागल अछि। पत्रकार लोकनिक नजरिमे ओएह सभसँ पैघ खबर अछि, दुनियामे किछु भ’ जाउ।

लिलीरे मैथिलीक सशक्त कथालेखिक छथि। हुनकर कथा ‘विधिक विधान’मे कामकाजी स्त्रीक संघर्षकें यथार्थतः देखबाक, आ यथार्थक मर्मकें कलात्मक कौंध संग उभारबाक सफल चेष्टा अछि। उषाकिरण खान अपन कथा ‘त्यागपत्र’मे ग्रामीण युवतीक अदम्य जिजीविषाकें व्यक्त करबामे पूर्ण सफल नहि भ’ सकलीह। घोर आदर्शवादी आ कठोर अनुशासित परिवारमे पालित-पोषित चम्पा कॉलेजमे पढ़’ चाहैत अछि, अपन मर्जीसँ विवाह कर’ चाहैत अछि। मुदा आजीवन विवाह नहि करबाक घोषणा करैत चम्पा स्वयंकें ओही परंपराक केंचुलमे समेटि लैत अछि। चम्पा विवाहक लक्ष्मण रेखा पार करैत ‘और भी गुम हैं’ कें आधार मानि अपन व्यक्तित्वकें विस्तृत आयाम नहि द’ पबैत अछि। मनमोहन झाक कथा ‘फयदा’मे स्त्री जातिक मोलभाव बला प्रवृत्तिक रेखांकन खूब जमल अछि, मुदा वो एहि प्रवृत्तिक वर्णन क’ स्त्री जाति कोन पक्षक उद्घाटन करै छथि, से बूझब कठिन। कोनो व्यक्तिक स्वभावमे नीक आ खराब दूनू भाव रहैत अछि। कथाक हेतु कोन तरहक भावक चुनाव कयल जाए, ई महत्वपूर्ण अछि। इएह चुनाव मैथिली कथामे स्त्री चेतनाक दर्शन करा सकैत अछि।

स्त्री चेतनाक दृष्टिएं प्रदीप बिहारीक कथा ‘मकड़ी’ अपेक्षाकृत मेच्योर्ड आ बोल्ड कथा कहल जा सकैछ। बेराबेरी कथानायिका सुनीता दू बेर विवाह करैत अछि, दुनू बेर ओकर पति मरि जाइछ, मुदा ओ जिनगीसँ हारि नहि मानैत अछि। सिलाई मशीन चला क’ ओ गुजर-बसर करैत अछि। एतबे नहि, ओ एकटा अनाथ आ बौक बच्चाक लालन-पालनक दायित्व ल’ क’ अपन व्यक्तित्वकें विस्तार दैत अछि। कथामे मोड़ तखन अबैत अछि जखन ओ बौका समर्थ भेला पर सुनीताक स्वीकृतियेसँ सही, ओकरा गर्भाधान क’ क’ भागि जाइत अछि। सुनीताकें एहि बातक अपराधबोध नहि छै, जे ओ बौका संग किए ई कृत्य

केलक, ओ देहक विवशतासँ परिचित अछि, मुदा बौकाक भागि जेबाक दंश ओकरा व्यथित करै छै। देवशंकर नवीनक कथा 'पेंपी' पति-पत्नीक सम्बन्ध विच्छेदक परिणामस्वरूप बेटीक मनोमस्तिष्क आ व्यक्तित्व पर पड़ैबला कुप्रभाव आ बेहिसाब उपेक्षाभावकें करुणापूर्ण ढंगसँ व्यक्त करैत अछि। मुदा एहिमे सभटा दोष स्त्री पर फेकि देब पूर्वाग्रह मानल जा सकैछ। ई सामाजिक सत्य नहि भ' सकैत अछि। वरिष्ठ कथाकार राजमोहन झा अत्यंत कुशलतापूर्वक 'भोजन' कथाक बहन्ने स्त्रीक बाहर काज करबाक विरोध क' जाइत छथि। राजमोहनजीक दक्षता इएह छन्हि जे ई सभ बात कहिओ क' ओ प्रगतिशील बनल रहै छथि।

राजकमल चौधरीक 'एकटा चम्पाकली एकटा विषधर', धूमकेतुक 'भरदुतिया', गंगेश गुंजनक 'अपन समांग' (ई कथा देसिल बयनामे सेहो संकलित अछि), तारानन्द वियोगीक 'पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' आ अशोकक 'तानपूरा' एहि संग्रहक श्रेष्ठ कथा मानल जा सकैछ। धूमकेतुक कथा 'भरदुतिया' व्यक्ति स्वार्थ हेतु भाई-बहिनक पावन पाबनिक दुरुपयोग करबैत देखबैत अछि। आजुक मनुख अहू पाबनिकें नहि छोड़लक। 'पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' वियोगीक सफल राजनीतिक कथा कहल जा सकैछ। कथाक ई निष्पत्ति एकदम ठीक लगैत अछि जे सवर्णक पार्टी एहि दुआरे जीतैत रहल जे निम्नजातिक आर्थिक स्थित बहुत खराब छल। स्वामीक पार्टी दासोक पार्टी होइछ। दोसर पार्टीक मादे सोचब मृत्युकें आमन्त्रण देब छल। आओर नइं किछु त' आवास आ रोजगार छीनि बेलल्ला बना देब उच्चवर्गक हेतु बाम हाथक काज छल। दिल्ली-पंजाब प्रवासँ निम्नवर्गक आर्थिक, सामाजिक स्थितिमे सुधार भेल। परिणामस्वरूप ओहि वर्गमे आत्मसम्मान आ राजनीतिक चेतनाक अंकुरण भेल। भक्तिकाव्यक उन्मेष आ ओहिमे निम्नजातिक कविक बाहुल्यक पृष्ठभूमिमे सुप्रसिद्ध इतिहाकार इरफमान हबीब मुगलकालीन विकास कार्यकें लक्षित केलनि अछि। 'पन्द्रह अगस्त सन्तानबे' कथाक विलक्षणता बिहारमे बनल निम्नजातिक पार्टीक आत्मालोचन थिक। कहबा लेल त' ई पार्टी निम्नजातिक-निम्नवर्गक छल, मुदा अइ पार्टीमे छल, प्रपंच, भ्रष्टाचार, अपराध आओर पाखण्ड पहिनुहुँसँ तेजगर और धारदार भ' गेल छल। कथाकारक इएह द्वन्द्व कथाकें गरिमा प्रदान करैछ। चाहक दोकान चलबैबला मुदा बहुत प्रारम्भहिसँ सक्रिय मूल्यपरक राजनीति करैबला हीरा महतोक धैर्य जखन संग छोड़ि दै छनि त' ओ पार्टी प्रमुख बासुदेव महतो पर

बिफरैत कहै छथि-- रे निर्लज्जा, एतबो सरम कर! जे कुकर्म करै छैं से अपन करैत रह, लेकिन एना समाजमे नइ कहिए जे कुकर्म करब ठीक छिए। एतबो रहम कर बहिं...।”

अशोकक कथा ‘तानपूरा’ मध्यवर्गीय हिप्पोक्रेसीक घटाटोपकें तार-तार क’ देबामे पूर्ण सफल भेल अछि। बिना कोनो उपदेश आ नैतिक आग्रहक कथा मध्यवर्गीय कुत्सित मानसिकताक दुर्ग भेदन करैत अछि। कथानायक विनोद बाबूक संगीत-प्रेमकें हुनक पिता घोर अभाव आ द्रिद्रीयक बीच जेना-तेना पूरा करैत छथि, मुदा जखन विनोद बाबूक पुत्र संगीत सिखबाक इच्छा प्रकट करै छनि त’ दुनू प्राणीकें साँप सूँघि जाइत छनि। एहि दुआरे नहि, जे हुनका कोनो तरहक अभाव छनि। बल्कि एहि दुआरे जे संगीतक स’ख हुनक बेटाकें रुपैया कमबैबला मशीन नहि बना सकत। जे दम्पति कोनो विषय पर कहियो एकमत नहि भेल, एहि विषय पर एकमत भ’ पुत्रक एहि अव्यावहारिक स’ख’क केठ मोंकबाक साजिशपूर्ण योजना बनबए लगै छथि।

संग्रहक किछु कथा जेना अवकाश, अयना, खान साहेब, जंगलक हरीन आदि यथार्थक मोहमे शुष्क गद्य बनि क’ रहि गेल अछि। एहिमे किछु कथा ततेक सरलीकृत भ’ गेल अछि जे ओ नवसाक्षर हेतु लिखल कथा बुझि पड़ैछ। एहन कथा सभक मूल संरचना इतिवृत्तात्मक अछि। यद्यपि इतिवृत्त कोनो कथाक सीमा नहि होइछ, मुदा जखन कोनो कथा घटनाक स्थूल आ तथ्यात्मक विवरण टा दैछ, कथामे समय वा क्षणक मर्म नहि आवि पबैछ, त’ एहन इतिवृत्त निपट गद्य बनि क’ रहि जाइछ। यथार्थ कोनो कथाकें विश्वसनीयता देबाक बदलामे ओकरा भीतरसँ संवेदना निचोड़ि अनैत अछि, कथाकें प्रमाणिक बनेबाक फेरमे पड़ल नहि रहैत अछि। कथाकार रमेश अपन कथा ‘नागदेसमे अयनाक व्यवसाय’मे अतियथार्थ आ इतिवृत्तक फ्रेमकें तोड़ि प्रतीक वा फैंटेसीक प्रयोगसँ कथा बुनबाक प्रयास त’ केलनि, मुदा कथाक विन्यासमे एकरसता आवि गेल। एहि फ्रेम हेतु हमरा लोकनिकें राजस्थानी कथाकार विजयदान देथा(दुविधा) आ हिन्दी कथाकार उदय प्रकाश (वारेन हेस्टिंग्स का सांढ़) आदिकें पढ़बाक चाही। हिनका लोकनिक कथा यथार्थक फ्रेमकें तोड़ियो क’ यथार्थ बनल रहल अछि।

मैथिलीमे प्रकाशित उक्त तीनू कथा संकलनसँ मैथिली कथाक प्रसार राष्ट्रीय स्तर पर भ’ रहल अछि, एहिमे दू मत नहि। मुदा उक्त संकलनकें पढ़ि

आम पाठकक राय इएह बनत जे मैथिलीमे कुल इएह तीस-चालीस गोट कथाकार आइ तक भेलाहे। कारण तीनों संग्रहमे कथाकारक सूचीमे अद्भुत साम्य अछि। कथा पढ़ि बुझना जाइछ जे कथा चयनमे कथाक अपेक्षा कथाकारकें महत्व देल गेल अदि। ई कहब सर्वथा अनुचित जे संकलनक कथाकार महत्वपूर्ण नहि छथि, मुदा अन्य श्रेष्ठ कथाकें सेहो प्रकाशमे अएबाक प्रयास हेबाक चाही। हमरा लोकनि ई नीक जकाँ जनै छी जे मैथिलीमे श्रेष्ठ कथाक अभाव नहि अछि। किन्तु प्रकाशनक अभावमे पत्र-पत्रिकाकें छानि मारब कठिनाहे नहि समय-साध्य कार्य थिक। वैद्यनाथ मिश्र यात्रीक पहिचान भने श्रेष्ठ कविक रूपमे छनि, मुदा हुनकर मैथिली कथा ‘चितकबड़ी इजोरिया’ आ ‘रूपांतर’ कतोक दृष्टिए महत्वपूर्ण अछि। रेणुजी सेहो मैथिली कथा लिखलनि अछि। ई दीगर बात थिक जे बादमे ओ हिन्दि ए टामे लिखए लगलाह। ‘नेपथ्य अभिनेता’ आ ‘जहां पमन को गमन नहीं’ आदि लीकसँ हटि क’ लिखल गेल कथा थिक। ‘उदाहरण’मे कथाक प्रकाशन वर्ष आ सन्दर्भक अनुपस्थिति खटकैत अछि। समय-सीमा जनने बिना कोनो कथाक सम्यक मूल्यांकन सम्भव नहि। नवीनजी सदृश दक्ष आ अनुभवी सम्पादकसँ ई आशा नहि कएल जा सकै छल। एहि कमीकें पूरा करैत अछि हुनकर चौदह पृष्ठीय भूमिका। सम्पादक मैथिली कथाक सीमा आ सम्भावनाक विस्तृत पड़ताल अपन एहि भूमिकामे केलनि अछि। मैथिली कथाक इतिहासकें बुझबा लेल ई भूमिका निश्चित रूपेँ रेखांकन योग्य अछि।

कमलानन्द झा
हिन्दी विभाग
सी.एम. कॉलेज
दरभंगा
फोन-09431857789
06272-256343

पुस्तकक नाम	-	उदाहरण
सम्पादक	-	देवशंकर नवीन
प्रकाशक	-	प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मन्त्रालय भारत सरकार
पृष्ठ	-	274
मूल्य	-	200 टाका मात्र

देवशंकर नवीन

ए-2/198, फेज-5, आयानगर एक्सटेंशन, नई दिल्ली 110047

अददी पेनकें मजगुत करबाक आवश्यकता

मिथिलाक सांस्कृतिक विरासत तकैत दूर धरि नजरि जाइत अछि, सबसँ पहिने देखाइत अछि जे उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक, गम्भीर चिन्तन-मनन करबाक, छोट-सँ-छोट बात पर पर्याप्त विचार-विमर्श करैत निर्णय लेबाक प्रथा मिथिलामे पुरातन कालसँ अबैत रहैत रहल अछि। मुदा तकर अतिरिक्त 'परसुख देबामे परमसुख'क आनन्द लेबाक आ जीवनक हरेक आचार एवं आचरणमे लयाश्रित रहबाक अभ्यास मैथिल जनकें निकेनाँ रहलनि अछि। स्वयं कष्ट सहिओ क', अपन सब किछु गमाइओ क', दोसरकें अधिकसँ अधिक प्रसन्नता देबाक आदति मिथिलामे बड़ पुरान अछि। प्रायः इएह कारण थिक जे अतिथि सत्कारमे मिथिलाक लोक अपना घरक थाड़ी-लोटा धरि बन्हकी राखि देलनि। दोसरकें सम्मान देबामे मैथिल नागरिक बढि-चढ़ि कए आगू रहल अछि। भनसियाक काज कर'बला व्यक्तिकें महाराज अथवा महाराजिन, केस-नह-दाढ़ी-मोँछ साफ कर'बला व्यक्तिकें ठाकुर-ठकुराइन, घर-आँगनमे नौरी-बहिकिरनी आ सोइरी घरमे परसौतीक काज करबाब'वाली स्त्रीकें दाय कहि

क' सम्बोधित करबाक प्रथा मिथिलामे एहने धारणासँ रहल होएत। ध्यान देबाक थिक जे मिथिलामे दादीकें, जेठ बहिनकें आ घ'रक अत्यधिक दुलारि बेटीकें दाय कहबाक परम्परा अछि।

अध्ययन, चिन्तन, मननक प्रथा मिथिलामे बड़ पुरान अछि। मुदा ई सत्य थिक जे अशिक्षक कारणें मिथिला एतेक पछुआएलो रहल। गनल गूथल जे व्यक्ति अध्ययनशील भेलाह, से अत्यधिक पढ़लनि, जे नहि पढ़ि सकल, से अपन रोजी-रोटीमे लागल रहल। रोजी-रोटीक एक मात्र आधार कृषि छल। विद्वान लोकनिक गम्भीर बहसमे बैसबाक अथवा ओहिमे हिस्सा लेबाक तर्कशक्ति, बोध-सामर्थ्य, आ पलखति रहै नहि छलनि, तें जे उपदेश देल जाइन्, तकरा आर्ष वाक्य मानि अपन जीवन-यापनमे मैथिल लोकनि तल्लीन रहै छलाह। ईश भक्तिक प्रथा अहू कारणें मिथिलामे दृढ़ भेल। मानव सभ्यताक इतिहास कहै'ए जे प्रकृति-पूजन, नदी-पहाड़-भूमि-वृक्ष-पशु आदिक पूजन एहि करणें शुरुह भेल जे प्रारम्भिक कालमे जीवन-रक्षाक आधार इएह होइत छल। लोक अनुमान लगौलक जे सृष्टिक कारण, स्त्री-पुरुषक जननांग थिक, तें ओ लिंग पूजा आ योनि-पूजा शुरुह केलक, जे बादमे शिवलिंग आ कामयोनि पूजाक रूपमे प्रचलित भेल। बादमे औजार पूजन होअए लागल।... तें पूजा पाठमे लीन हेबाक प्रथा पुरान अछि। मिथिलामे ओहि समस्त पूजन-पद्धतिक अनुपालन तँ होइते रहल; पितर पूजा, ग्रामदेव पूजा, ऋतु पूजा, फसल पूजा, कुलदेव-देवी पूजा आदिक प्रथा बढ़ल। हमरा जनैत विद्वान लोकनि द्वारा ईश भक्तिक उपदेश एहि लेल देल जाइत रहल हएत जे ईश भक्तिमे लागल लोक धर्म-भयसँ सदाचार अनुपालनमे लागल रहत, सद्गुणमे लीन रहत, सामाजिक मर्यादाक ध्यान राखत, भुजबल-धनबलक मदमे निर्बल-निर्धन पर अत्याचार नहि करत।...लक्ष्यपूर्ति त' नहिँ भेल, उनटे लोक धर्मभीरु, पाखण्डी अन्धविश्वासी आ निरन्तर लोभी, स्वार्थी, अत्याचारी होइत गेल, परिणामस्वरूप आजुक मैथिल-प्रवृत्ति हमरा सभक सोझाँ अछि।

कृषि जीवनसँ समाजक कौटुम्बिक बन्हन एते मजगुत छल, जे भूमिहीनो व्यक्ति सम्पूर्ण किसानक दर्जा पवै छल। हरेक गाममे सब वृत्तिक लोक रहै छल। डोम, चमार, नौआ, कुमार, गुआर, धोबि, कुम्हार, कोइरी, बाह्यण, क्षत्री... आदि समस्त जातिक उपस्थितिसँ गाम पूरा होइ छल। जमीन्दार लोकनि समस्त भूमिहीनकें जागीर दै छलाह, बाह्यण पुरहिताइ करै छलाह, नौआ केश कटै छलाह; कुमार ह'र-फार, चौकी केबाड़ बनवै छलाह; धोबि कपड़ा-बस्तर धोइ छलाह...। सम्पूर्ण समाज एक परिवार जकाँ चलै छल। सब एक दोसरा लेल जीबै छलाह, सब गोटाए

किसान छलाह, कृषि-सभ्यतामे मस्त छलाह ।

सिरपंचमी दिनक ह'र-पूजा हो; दसमी, दीया-बाती, सामा-चकेबाक उत्सव हो; मूड़न-उपनयन-विवाह-श्राद्ध हो; छठि अथवा फगुआ हो... बिना सर्वजातीय, सर्ववृत्तीय लोकक सहभाग नेने कोनो काज पूर नहि होइ छल । एहिमेसँ बहुत बात तँ एखनहुँ बाँचल अछि, होइत अछि ओहिना, ओकर ध्येय कतहु लुप्त भ' गेल अछि ।

मिथिलाक विवाहमे एखनहुँ जा धरि नौआ ब'रक कानमे हुनकर खानदान लेल गारि नहि देताह (परिहास लेल); धोबिन अपना केस संगें कनियाँक केस धो क' सोहाग नहि देतीह, विवाह पूर्ण नहि मानल जाइत अछि । ध्यान देबाक थिक जे एहि तरहेँ ओहि नौआकें कन्याक पिता आ धोबिनकें कन्याक माइक ओहदा देल जाइत अछि । मिथिलाक छठि पाबनि तँ अद्भुत रूपें सम्पूर्ण विरासतक रक्षा क' रहल अछि । नदीमे ठाढ़ भ' कए सूर्यकें अर्घ देबाक ई प्रथा जाति-धर्म समभावक सुरक्षा एना केने अछि जे समाजक कोनहुँ वर्गक सहभागक बिना ई पाबनि पूर्ण नहि होएत । नेत अइ स'ब टामे एकता आ समानताक सूत्र स्थापित रखबाक रहैत छल । ई कलंक स्वातन्त्र्योत्तरकालीन मिथिलाक स्वाधीन मानवक नाम अथवा वैज्ञानिक विकास, बौद्धिक उन्नति, औद्योगिक प्रगतिक माथ जाइत अछि, जे समस्त विकासक अछैत मानव-मनमे लोभ-द्रोह, अहंकार एहि तरहेँ भरलक छूआछूत, जाति-द्वेष, शोषण-उत्पीड़न बढ़ैत गेल; आ आइ मिथिला-समाज, जे त्याग, बलिदान, प्रेम, सौहार्द लेल ख्यात छल, सामाजिक रूपें खण्ड-खण्ड भेल अछि । पैघसँ पैघ आपदा, विभीषिका ओकरा एक ठाँ आनि कए, एकमत नहि क' पबै'ए । मिथिलाक उदारता आ सामाजिकता ई छल जे ककरो बाड़ी-झारीमे अथवा लत्ती-फत्तीमे अथवा कलम-गाछीमे नव साग-पात, तर-तरकारी, फूल-फल होइ छल तँ सभसँ पहिने ग्रामदेवक थान पर आ पड़ोसियाक आँगनमे पहुँचाओल जाइ छल; कोनो फसिल तैयार भेलाक बाद आगों-राशि कोनो परगोत्रीकें देल जाइ छल; खेतमे फसिल कटबा काल खेतक हरेक टुकड़ीमे एक अंश रखबारकें देल जाइ छल...ई समस्त बात सामाजिक सम्बन्ध-बन्धक मजगूतीक उदाहरण छल ।

कोनो स'र-कुटुमक ओतएसँ कोनो वस्तु सनेसमे आबए, तँ ओ सौंसे टोलमे लोक बिलहै छल ।...कहबा लेल कहि सकै छी जे ई मैथिलजनक जीवनक नाटकीयता आ प्रशंसा हेतु लोलुपता रहल होएत... मुदा तकर अछैत एहि पद्धति आ परम्पराक श्रेष्ठता आ सामाजिक मूल्य हेतु एकर आवश्यकतासँ मुँह नहि मोड़ल

जा सकैत अछि। गाममे कोनो बेटीक दुरागसनक दिन तय होइ छल, तँ बेटीक सासुरसँ आएल मिठाइ भरि गाममे बिलहल जाइ छल। तात्पर्य ई होइ छल जे भरि गामक लोक बूझि जाए, जे ई बेटी आब अइ गामसँ चल जाएत। ओहि बेटीकेँ भरि गामक लोक धन-वित्त-जातिसँ परे, ओहि बेटीकेँ अपना घरमे एक साँझ भोजन करबै छल। सब किछुक लक्ष्यार्थ गुप्त रहै छल। एकर अर्थ ई छल, जे सम्पूर्ण गाम अपन-अपन थाड़ी-पीढ़ी देखा कए ओहि बेटीक विवेककेँ उद्बुद्ध करै छल जे बेटी! आब तों ई गाम, ई कुल-वंश छोड़ि आन ठाम जा रहल छह, हमरा लोकनि अपन शील-संस्कृतिक ज्ञान तोरा देलियहु, सासुर जा कए, ओतुक्का शील-संस्कार देखि कए अपन विवेकसँ चलिह', आ अपन गाम, अपन कुल-शीलक प्रतिष्ठा बढ़बिह'। इएह कारण थिक जे पहिने कोनो बेटीक दुरागमनक दिन पैघ अन्तराल द' कए तय होइ छल। मुदा आब ई रिवाज एकटा औपचारिकता बनि कए रहि गेल अछि; गामक बेटीकेँ अपन बेटी मानिते के अछि?

मिथिलामे कोनो स्त्री संगें भैंसुर आ ममिया ससुरक वार्तालाप, भेंट-घाँट वर्जित रहल अछि, एते धरि जे दुनूमे छूआछूतक प्रथा अछि। आधुनिक सभ्यताक लोक एकरा पाखण्ड घोषित केलनि। परिस्थिति बदलै छै, त' मान्यताक सन्दर्भ बदलि जाइ छै, से भिन्न बात; मुदा एहि प्रथाकेँ पाखण्ड कहनिहार लोककेँ ई बुझबाक थिक जे ई प्रथा एहि लेल छल, जे एहि दुनू सम्बन्धमे समयस्की हेबाक सम्भावना बेसी काल रहै छल। संयुक्त परिवारक प्रथा छल, कखनहुँ कोनो अघट घटि सकै छल। ई वर्जना एकटा शिष्टाचार निर्वहरण हेतु पैघ आधार छल। प्रायः इएह कारण थिक जे विवाह कालमे घोघट देबा लेल प्राथमिक अधिकार अही दुनू सम्बन्धीय व्यक्तिकेँ देल जाइ छनि। जाहि स्त्रीकेँ केओ भैंसुर अथवा ममिया ससुर नहि छनि, हुनकहि टा ससुर स्थानीय कोनो आन व्यक्ति घोघट दै छनि। घोघट देबाक प्रक्रियामे कतेक नैतिक बन्हन रहैत अछि, से देखू, जे सकल समाजक समक्ष भैंसुर, नव विवाहित भावहुक उधार माथकेँ नव नूआसँ झाँपै छथि आ बगलमे ठाढ़ ब'र ओहि नूआकेँ घीचिकए माथ उधारि दैत अछि, ई प्रक्रिया तीन बेर होइत अछि, अन्तिम बेर माथ झाँपले राखल जाइत अछि। अर्थात्, सकल समाजक सम्मुख ओ व्यक्ति प्रतिज्ञा करैत अछि--हे शुभे! हम, तोहर भैंसुर (ससुर) प्रण लैत छी, जे जीवन पर्यन्त तोहर लाजक रक्षा करब! एते धरि जे अग्नि, आकाश, धरती, पवनकेँ साक्षी राखि जे व्यक्ति तोरा संग विवाह केलकहु अछि, सेहो जखन तोहर लाज पर आक्रमण करतहु, हम तोहर रक्षा लेल तैयार रहब!

अही तरहें उपनयनमे आचार्य, बह्मा, केस नेनिहारि, भीख देनिहारि, डोम, चमार, नौआ, धोबि, कमार, कुम्हार आदिक भागीदारी; आ एहने कोनो आन उत्सव, संस्कारमे सामूहिक भागीदारी सामाजिक अनुबन्धक तार्किक आधार देखबैत अछि।

कहबी अछि जे मैथिल भोजन भट्ट होइ छथि। अइ कहबीक त'हमे जाइ तँ ओतहु एकर सांस्कृतिक, पारम्परिक सूत्र भेटल। मिथिलाक स्त्री, खाहे ओ कोनहु जाति-वर्गक होथि, तीक्ष्ण प्रतिभाक स्वामिनी होइत रहल छथि। मुदा परदा प्रथाक कारणें हुनकर पैर भनसा घरसँ ल' क' अँगनाक डेरही धरि बान्हल रहै छलनि। अधिकांश समय भनसे घरमे बितब' पड़नि। सृजनशील प्रतिभा निश्चिन्त बैस' नहि दैन। की करितथि! भोजनक विन्यासमे अपन समय आ प्रतिभा लगब' लगलथि। आइयो भोजनक जतेक विन्यास, तीमन-तरकारीक जतेक कोटि, चटनी आ अचारक जेतक विधान मिथिलामे अछि, हमरा जनैत देशक कोनहुँ आन भागमे नहि होएत। वनस्पतिजन्य औषधिकें सुस्वादु भोजन बनएबाक प्रथा सेहो मिथिलामे सर्वाधिक अछि।... आब जखन एते प्रकारक भोजन ओ बनौलनि, तँ उपयोग कतए हैत?... घरक पुरुष वर्गकें खोआओल जाएत। सर्वदा एहिना होइत रहल अछि, जे कोनो क्रियाक विकृति प्रचारित भ' जाइत अछि, मूल तत्व गौण रहि जाइत अछि। मैथिल पेटू होइत अछि, से सब जनै'ए, मुदा मिथिलाक स्त्रीमे विलक्षण सृजनशीलता रहलैक अछि, से बात कम प्रचारित अछि। जे स्त्री कामकाजी होइ छलीह, खेत-पथार जा कए शरीर श्रम करै छलीह, गामक बाबू बबुआनक घर-आँगन नीपै, लेबै छलीह, तिनकहु कलात्मक कौशल हुनका लोकनिक काजमे देखाइ छल।

स्त्री जातिक कला-कौशलक मनोविज्ञानक उत्कर्ष तँ एना देखाइ अछि जे हुनका लोकनिक उछाह-उल्लास धरिमे जीवन-यापनक आधार आ घर-परिवारक मंगलकामना गुम्फित रहै छल। जट-जटिन लोक नाटिका विशुद्ध रूपसँ कृषि कर्मक आयोजन थिक, जे अनावृष्टिक आशंकामे मेघक आवाहन लेल होइ छल, होइत अछि; सामा भसेबा काल गाओल जाइबला गीतमे सब स्त्री अपन पारिवारिक पुरुष पात्रक स्वास्थ्यक कामना करै छथि; विवाह उपनयनमे अपरिहार्य रूपें वृक्ष पूजा (आम, महु), नदी पूजा, प्रकृति पूजा आदि करै छथि। विभिन्न वृत्तिक लोकक अधिकार क्षेत्र पर नजरि दी, तँ नौआ, कमार, कुम्हार, डोम, धोबि... सबहक स्वामित्व निर्धारित रहैत आएल अछि। जाहि गाम अथवा टोल पर जिनकर स्वामित्व छनि, हुनकर अनुमतिक बिना केओ दोसर प्रवेश नहि क' सकै छलाह। ई लोकनि आपसी समझौतासँ अथवा निलामीसँ गामक खरीद-बिक्री करै छलाह। एहि व्यवहारमे

जजमानक कोनो भूमिका अथवा दखल नहि होइ छल ।

हस्तकलाक कुटीर उद्योग एतेक सम्पन्न छल, जे सामाजिक व्यवस्थामे सब एक दोसरा पर आश्रित छल । सूप, कोनियाँ, पथिया, बखाड़ी, घैल, छाँछी, सरबा, पुरहर, मौनी, पौती, जनौ, चरखा, लदहा, बरहा, गरदामी, मुखारी, उधैन, कराम, खाट, सीक, अरिपन... सब किछु लुप्तप्राय भ' गेल । एते धरि जे ई शब्द आ क्रिया अपरिचित भेल जा रहल अछि । ढोनि केनाइ, भौरी केनाइ, केन केनाइ, पस'र चरेनाइ, झिल्लैर खेलेनाइ सन क्रिया, आ सुठौरा, हरीस, लागन, बरेन, जोती, कनेल, पालो, चास, समार, फेरा, पचोटा, ढोसि, करीन सन शब्द आब आधुनिक साहित्योमे कमे काल अबैए ।

मिथिलाक एहेन विलक्षण विरासत—कला, संस्कृति आ जीवन-यापन पद्धतिक उत्कृष्ट उदाहरण सम्भावनाविहीन भविष्यक कारणें आ सामाजिक कटुताक कारणें हेराएल जा रहल अछि । नवीन शिक्षा पद्धतिसँ सामाजिक जागृति बढ़ल, मुदा ओहि जागृतिक समक्ष ठढ़ भेल वैज्ञानिक विकास आ आर्थिक उदारीकरणक प्रभावमे अहंकारग्रस्त समृद्ध लोकक लोलुपता आ क्षुद्र वृत्ति । संघर्ष जायज छल । अपन पारम्परिक वृत्ति आ हस्तकलामे, पुश्तैनी पेशामे लोककें अपन भविष्य सुरक्षित नहि देखेलै । 'रंग उड़ल मुरुत' कथामे मायानन्द मिश्र आ 'रमजानी' कथामे ललित मिथिलाक परम्परा पर आघात देखा चुकल छथि ।...

ख'ढ़क घर आब होइत नहि अछि, घरामीक वृत्ति एहिना चल गेल । सीक'क प्रयोजन, खाटक प्रयोजन समाप्त भ' गेल, बचल-खुचल माल-जाल लेल नाथ-गरदामी आब प्लास्टिकक बनल-बनाएल डोरिसँ होअए लागल, बच्चाक खेलौना प्लास्टिकक होअए लागल । नौआ, कमार, धोबि, डोमक जागीर आपस लेल जा लागल । ओ लोकनि अपन पुश्तैनी पेशा छोड़ि आन-आन नोकरी चाकरीमे जाए लगलाह । स्त्री जाति आब भानस करबा लेल किताब पढ़ए लगलीह, फास्ट फूड खएबाक प्रथा विकसित भेल । मिथिला पेंटिंगकें आफसेट मशीन पर छपवा कए पूँजीपति लोकनि री-प्रोडक्शन बेच' लगलाह । जट-जटिन आ सामा-चकेबाक खेलक विडियोग्राफी देखाओल जाए लागल । गोनू झा, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, कारू खिरहरि, लोरिकाइनि आदिक कथा छपा कए बिक्री होअए लागल, टेप पर रेकॉर्ड क' कए, अथवा सी.डी.मे तैयार क' कए, री-मिक्ससँ ओकर मौलिकतामे फेंट-फाँट क' कए लाक सुन' लागल, आ एकरा अपन बड़का उपलब्धि घोषित कर' लागल । ... अर्थात् जे लोककला लोकजीवनक संग विकसित आ परिवर्द्धित होइ छल, तकर

अभिलेखनसँ (डकुमेण्टेशन) ओकरा स्थिर कएल जा लागल । लोकजीवनक संग अविरल प्रवाहित रहैवाली सांस्कृतिक-धारा आब अभिलेखागारमे बन्द रहत, ओकर विकासक सम्भावना स्थगित रहत ।

अइ समस्त वृत्तिमे जुड़ल लोककें सम्मानित जीवन जीबै जोगर वृत्ति द' कए एकर विकासमान प्रक्रियाकें आओर तीव्र करबाक आवश्यकता छलै, मुदा जखन मिथिलाक लोके ओ 'लोक' नहि रहि गेल अछि, तखन लोक-संस्कृति आ लोक-परम्पराक रक्षा के करत?